उत्तर का ध्रुव तारा



प्रशममूर्ति, दिगम्बर जैनाचार्य
श्री 108 शान्तिसागर जी महामुनिराज (छाणी)

जीवन परिचय

उत्तर भारत के प्रथमाचार्य

प्रशम मूर्ति आचार्य 108

श्री शांतिसागर जी महाराज (छाणी)

-: मंगल आशीर्वाद :-

समाधिस्थ प.पू. आचार्य 108
श्री विद्याभूषण सन्मति सागर जी मुनिराज

समाधिस्थ प.पू. सराकोद्धारक आचार्य 108
श्री ज्ञान सागर जी मुनिराज

परम विदुषी लेखिका, भारत गौरव,
गणिनी आर्यिका रत्न 105 श्री स्वस्ति भूषण माताजी

निर्देशन एवं सहयोग :- ब्र. प्रियंका दीदी

सम्पादक :- ब्र. मनीष जैन 'ज्ञान', जहाजपुर

प्रकाशक :- श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि॰)

मुद्रक : दिपिशा एंटरप्राइज (दिल्ली) मो. 9210488047

कृति : जीवन परिचय उत्तर भारत के प्रथमाचार्य प्रशम मूर्ति
आचार्य 108 श्री शांतिसागर जी महाराज (छाणी)
न्यौछावर राशि : रु. 40.00 मात्र (साहित्य सृजन हेतु)
प्रकाशन वर्ष : 2026 **प्रथम संस्करण :** 1100 प्रतियाँ
प्राप्ति स्थान

1. श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि.)
   26/86 बी, तृतीय फ्लोर, गली नं. 10, पाण्डव रोड़, विश्वास नगर, शाहदरा, दिल्ली-110032
   दूरभाष : 9310710606, 9650946696, 9811925429
2. श्री जैन साहित्य सदन, लाल मन्दिर, चाँदनी चौक, दिल्ली
   दूरभाष : 09311168299, 011-23253638
3. श्री सोनागिर सिद्ध तीर्थ क्षेत्र, दतिया (मध्य प्रदेश), दूरभाष : 9425726867
4. श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र स्वस्तिधाम
   शाहपुरा रोड़, जहाजपुर, जिला भीलवाड़ा, राजस्थान, दूरभाष : 8824620107

तेजोमयि व्यक्तित्व की धनी आर्यिकारत्न श्री स्वस्तिभूषण माताजी

-डॉ. श्रेयांस कुमार जैन, बड़ौत
(अध्यक्ष-अ.भा. शास्त्री परिषद्)

यों तो आर्यिकाओं और साध्वियों का बहुत बड़ा समुदाय भारत वसुंधरा पर जिनधर्म की प्रभावना कर रहा है। उनमें विलक्षण प्रज्ञा और प्रतिभा को धारण करने वाली आर्यिका माताओं का विशिष्ट स्थान है। उन्हीं प्रज्ञा और प्रतिभाशीला आर्यिकाओं में गणिनी आर्यिका श्री स्वस्तिभूषण माताजी का व्यक्तित्व प्रभावपूर्ण और आकर्षक है। इनके जीवन में सरलता, विद्वत्ता, श्रद्धा और विवेक का अनूठा संयोग है। वह मधुर भाषिणी, शांतचेता और सदा प्रसन्न रहने वाली आर्यिका हैं। सदा स्वाध्याय, ध्यान, चिंतन, मनन अध्ययन - अध्यापन में लीन रहती हैं।

मैत्री, करुणा, प्रमोद, माध्यस्थ भाव आपके जीवन के कण-कण में समाए हुए हैं। यही कारण है कि आपके जीवन में कटुता और क्रोध कषाय आदि का अभाव है। आप प्रत्येक व्यक्ति में गुण अवलोकन करती हैं और नीरस जीवन में भी सरसता के सम दर्शन करती हैं। आपके पीयूषवर्णी प्रवचनों ने लोगों में आस्था के दीप प्रज्वलित किए हैं। समाज के व्यक्तियों में अंधविश्वास, अंधपरम्परा, रूढ़िवाद, जातिवाद, स्वार्थ, अंधता, ऊंच-नीच विषयक विषमता आदि दुर्गुणों को हटाने में आपकी अहम भूमिका है। नैतिक उत्थान के लिए आप अहर्निश प्रयत्न करती रहती हैं।

आपने दीक्षा धारण करने के बाद भी शिक्षा निरंतर ग्रहण की है, क्योंकि दीक्षा के साथ शिक्षा भी आवश्यक है। बिना शिक्षा के दीक्षा में कोई चमत्कृति पैदा नहीं होती है। ज्ञानाराधना से साधक जीवन में निखार आता है, जो आपश्री के जीवन में आया। ज्ञानाराधन करते हुए आपने शताधिक ग्रंथों का लेखन किया है। भक्ति साहित्य में तो नई चेतना ही लाई है। बहुत विधान और पूजाओं का

लेखन कर लाखों लाखों व्यक्तियों को जिनेन्द्र भक्ति में जोड़ा है। समवशरण विधान, सर्वतोभद्र विधान, सिद्धचक्रविधान, कल्पद्रुम विधान आदि महाविधानों के माध्यम से समाज को भक्ति आयोजन करने-कराने की प्रेरणा दी है। वहीं एक दिवसीय विधानों के माध्यम से भक्ति सरोवर में अवगाहन कराया है। आपकी लेखनी लोकप्रिय है। आप निरंतर सरल, सरस, सुबोध लेखन करती हैं। काव्य क्षेत्र में 'बड़ा ही महत्व है' इस काव्य के माध्यम से तो जन-जन को लुभाने का कार्य किया है। सभी लोगों में माताजी द्वारा बोला और लिखा जाने वाला 'बड़ा ही महत्व है' बड़ा ही प्रिय है। लेखन शैली जितनी प्रभावक है, उतनी ही प्रभावक आपकी प्रवचन शैली है। प्रवचन करते हुए जब आपकी वाणी रूपी सरिता कल-कल छल-छल कर प्रवाहित होती है तो श्रोता गण आनंद से झूम उठते हैं। आपके प्रवचनों में अंत:करण से निकले हुए उद्‌गार बहुत ही स्फूर्त सहज और स्वाभाविक होते हैं।

आपके जीवन की अनेक विशेषताएं हैं। अलौकिक शिक्षा में विशेष सम्मान

प्राप्त कर धार्मिक शिक्षा की गहराइयों में पहुंची, आध्यात्मिक क्षेत्र में बहुमान को प्राप्त किया। अपने गुरु सिंहरथ प्रवर्तक आचार्य श्री विद्याभूषण सन्मतिसागर महाराज की अनुकृति बनकर उन जैसे ही शताधिक रचनाएं कर गौरव बढ़ाया और लोकोत्तर रचना त्रिलोक तीर्थ के समान देवाधिदेव श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकर की मनोहर चमत्कारी प्रतिमा को विराजित कर जहाजपुर में जहाजाकृति जैन मंदिर का निर्माण कराया जहाजपुर अतिशय क्षेत्र को त्रिलोक तीर्थ जैसी प्रसिद्धि प्राप्त कराने वाली आर्यिकाश्री स्वस्तिभूषण अपने आप में महान तेजोमयी व्यक्तित्व हैं। आपने अतिशय क्षेत्र पद्मपुरा में चौबीसी निर्माण, सिद्ध क्षेत्र सोनागिरि में सहस्रकूट जिनालय, झालरापाटन पाटन का जीर्णोद्धार, मुरैना में गुरुकुल, डोला जी अतिशय क्षेत्र का जीर्णोद्धार आपके निर्देशन में सम्पन्न हो रहा है एवं केशवराय पाटन प्राचीन तीर्थ का संपूर्ण नवीनीकरण भी आपके निर्देशन में हो रहा हैं।

इनके जीवन में सूर्य की तेजस्विता, चंद्रमा की शीतलता, सागर की गंभीरता, पृथ्वी की सहिष्णुता, कमल की निर्लिप्तता आकाश की शुभता है। जीवन में

सद्गुणों का साम्राज्य है। आपकी आकृति में नम्रता है, प्रकृति में सहजता है और सेवा में नि:स्वार्थता है। ज्ञान की गरिमा और आचार की मधुरिमा से आपका व्यक्तित्व जगमगा रहा है।

हमें गौरव है कि विद्वानों को सतत वात्सल्य प्रदान कर अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन शास्त्री परिषद् को अधिवेशन, अनेक संगोष्ठियों की प्रेरणादात्री विभूति संयम साधना के क्षेत्र में अभिनंदनीय व्यक्तित्व की धनी स्वस्ति भूषण माता जी के चरणों में बारंबार वंदामि।

होने लगे गुरु के दर्शन, मुनियों के चरण स्पर्शन

उत्तर का ध्रुव तारा

–आर्यिका स्वस्तिभूषण

उत्तर भारत में राजस्थान प्रदेश झीलों की नगरी उदयपुर जिला के छाणी ग्राम में, 31 अक्टूबर 1888 में एक ऐसे सितारे ने जन्म लिया, जो आज, उत्तर के ध्रुव तारा की तरह चमक रहा है। जिसकी चमक सैकड़ों संतो परंपरा के रूप आज भी बरकरार हैं। आकाश में तारे तो असंख्यात है पर उत्तर के ध्रुव तारे की बात ही कुछ और हैं। जो अनंत काल से एक जगह रहकर अपने अस्तित्व को कायम रखे है। ठीक ऐसे ही छाणी ग्राम में ऐसे बालक (केवलदास) ने जन्म लिया जो पूरे धरती के मनुष्यों के बीच आज भी स्मरण किया जा रहा है। जिसने अपना जीवन, सबसे अलग जिया। और उन परिस्थितियों में जहाँ मुनियों

के दर्शन ही नहीं होते थे। अंग्रेजो का शासन था। दिगम्बर मुनि के नगर भ्रमण की जहाँ आज्ञा नहीं थी। ऐसी विपरीत परिस्थितियों में ब्रम्हचारी केवलदास, ब्रह्मचर्य प्रतिमा, क्षुल्लक शांतिसागर, मुनि शांतिसागर, और आचार्य शांतिसागर जी की दीक्षा धारण कर देश को धर्म का संदेश दिया। सोये हुये को जगाया, त्याग व्रत संयम के बीज बोये, भक्तों को भगवान से जोड़ा, शास्त्रों को जीकर दिखाया। निश्चित ही आप अदम्य साहसी, कठोर, परिश्रमी, निडर, शांत मूर्ति, समताधारी, सामाजिक बुराइयों को समाप्त करने वाले निस्संग प्रवचन के माध्यम से आत्मा में ज्ञान के बीज डालने वाले, गुरुवर आपका वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता। आपका उपकार चुकाया नहीं जा सकता।

इस किताब को पढ़ने का फल

आपके जीवन की कथा जो पढ़ लेगा। वो अनंत पापों का नाश करेगा। अनंत पुण्य का धारी बनेगा, धर्म मार्ग मे बढ़ने वाले भावों का जन्म होगा,

धर्म करने की शक्ति मिलेगी, धर्म में दृढ़ होने का भाव जगेगा और संकल्प शक्ति का संचार होगा। आपकी कथा पढ़कर ऐसा लगा कि जैसे आप भविष्य में तीर्थंकर बनने वाले हों। और वर्तमान में जिसका सूक्ष्म रुप उदय में आया हो।

धन्य है बागड़

धन्य है पूरा बागड़ प्रान्त आज उनके नाम से प्रसिद्ध है। परम पूज्य प्रशममूर्ति 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी प्रथम छाणी महाराज, बागड़ की पहचान है, बागड़ की शान है, बागड़ वालों का स्वाभिमान है। जहाँ उनका जन्म हुआ, जहाँ उन्होंने व्रत लिया, जहाँ उन्होंने क्षुल्लक दीक्षा ली, जहाँ उन्होंने मुनि दीक्षा ली और वहीं उनका समाधि स्थल बना। सारा श्रेय बागड़ वालों को जाता है।

किताब कैसे लिखी गई?

ब्रह्मचारी मनीष भैया जी जो कि सराकोद्धारक आचार्य श्री ज्ञान सागर जी महाराज के शिष्य है आपकी 40 वर्षों की संयम साधना है। स्वास्थ्य प्रतिकूल होने के बाद भी आप संयम मार्ग में डटे रहे, और आज भी अपनी साधना से कर्मों की निर्जरा कर रहे है। आपका ज्ञान ध्यान निरंतर चलता रहता। आपकी गद्य लेखन शैली उत्कृष्ट है। आपकी खोज पूर्ण बुद्धि कठिन से कठिन काम को भी सहजता में कर देती है।

आपने अथक परिश्रम करके आचार्य शांतिसागर जी के इतिहास की अनेक किताबों को पढ़ा और उसमें से संक्षिप्त रूप आचार्य श्री का जीवन परिचय लिखा। जो कि एक पुस्तक का आकार ले रहा है। प्रयास और पुरुषार्थ से सैकड़ों जगह फोन करके आपने शांतिसागर जी छाणी परम्परा की साधुओं की सूची तैयार की है, जो कि प्रथम बार ही इसका संकलन हुआ। सूची देखकर लगा एक संत

से इतने संतो का जन्म हो सकता है क्या? पर हुआ है। एक साधक, एक मोक्षमार्गी ने, हजारों मोक्षमार्गी बना दिये। ब्र. मनीष भैया जी भी इसी परम्परा के साधक है, जिन्होंने गुरु भक्ति के वशीभूत इसका सृजन किया है।

किताब लिखने का उद्देश्य

इंसान को अपने जीवन में कभी किसी का उपकार नहीं भूलना चाहिये।

माता-पिता का उपकार है, उन्होंने इस शरीर को जन्म दिया पर गुरु का उपकार है कि उन्होंने आत्मज्ञान को जन्म दिया, शरीर के स्तर से उठाकर आत्मा के स्तर पर जीवन जीना सिखाया। दीक्षा, शिक्षा और संस्कार दिये। मिट्टी के शरीर में अमृत जैसी आत्मा के दर्शन कराये। ऐसे परम गुरु के उपकार को नहीं भूलना चाहिये।

जिस समय मुनिराजों के दर्शन नहीं होते थे, पंडित बनारसी दास लिखते है कि वीतरागी मुनिराजों के दर्शन कब होगे। एक बार कुछ दिन तक पंडित

बनारसी वस्त्र उतार कर कुछ दिन कमरे में बंद होकर रहे, पर निर्भय निशंक होकर दीक्षा लेकर विचरण नहीं कर पाये। ऐसे काल में आचार्य शांतिसागर छाणी महाराज ने दिगम्बर भेष को धारण किया, मुनि दीक्षा लेकर ग्राम नगर शहरों में विचरण करके वीतरागता का दिग्दर्शन कराया। ऐसे गुरु की परम्परा सैकड़ों संत विचरण कर रहे हैं। हम ऐसे परम गुरु के उपकार में उनके लिये क्या कर सकते हैं।

सराकोद्धारक आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज ने गुरु नाम गुरु आचार्य श्री शांतिसागार जी महाराज की प्रभावना वृहद रुप में की। उन्हें मुझसे भी अपेक्षा थी कि मैं भी करूँ। उनकी प्रेरणा से प्रेरित होकर, आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के 100 वें आचार्य पद को 'आचार्य शताब्दी महोत्सव' के रूप में मनाने का विचार किया। और इस यज्ञ जहाजपुर, स्वस्ति धाम की कमेटी, हंसमुख गांधी जी, शरद जी, विनोद जी टोरड़ी, योगेश जी दिल्ली, आनन्द जी दिल्ली, दिनेश जी खोड़निया, सुरेश जी सिंघवी बांसवाड़ा, पंकज जी बांसवाड़ा आदि

सभी चर्चा की वे सभी सहर्ष तैयार हुये और यह उत्सव मनाने के लिये मीटिंग की और तैयारियाँ शुरू हो गई। सभी अपनी-अपनी तरह से तैयारी कर रहे थे। और ब्र. मनीष भैया जी ने इस किताब को लिखा। मैंने आचार्य छत्तीसी विधान, आरती चालीसा को लिखकर भक्ति अर्पित की।

सम्पादकीय

परम विदुषी लेखिका रत्न गणिनी आर्यिका श्री स्वस्तिभूषण माता जी की मंगल प्रेरणा एवं आशीष से स्वस्तिधाम समिति ने प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर जी छाणी महाराज के आचार्य पदारोहण के 100 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में शताब्दी समारोह मनाने का संकल्प लिया है, यह समारोह सन् 2026 में पूरे वर्ष मनाया जायेगा। ज्ञातव्य हो प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी महाराज को गिरिडीह में सन् 1926 में आचार्य पद से विभूषित किया गया था।

स्वस्तिधाम प्रणेत्री गणिनी आर्यिका स्वस्तिभूषण माता जी का भाव है कि परम्परा के समस्त साधुवृंद एवं समस्त संघ अपने स्थान पर शताब्दी समारोह मनायें एवं विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करें। इस समारोह के सम्बन्ध में आप सभी के कुछ सुझाव हों तो समिति को प्रेषित करें। सहयोग के लिए स्वस्तिधाम समिति एवं आचार्य पदारोहण शताब्दी समारोह समिति हमेशा तत्पर रहेगी।

इस सन्दर्भ में 20 सितम्बर 2025 को स्वस्तिधाम में विशाल सभा आयोजित हुई थी, जिसमें सम्पूर्ण भारत से श्रेष्ठी जन पधारे। उसमें बहुत सुझाव आये, उन्हें माता जी के निर्देशन में आगे बढ़ाया जा रहा है। प्रचार-प्रसार की बात आयी तो प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर जी छाणी महाराज के जीवन परिचय हेतु लघु पुस्तिका का विचार आया।

आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज (उस समय पर उपाध्याय पद से सुशोभित) ने 1990-91-92 में आचार्य शांतिसागर जी (छाणी) महाराज के सम्बन्ध में जगह-जगह शोध खोज कराई थी। पहले कहीं कुछ ज्यादा कार्य नहीं हुआ था, यहाँ तक कि अच्छे फोटो भी नहीं थे, परिचय आदि नहीं मिल रहा था। आचार्य ज्ञानसागर जी ने पश्चिमी उत्तर प्रदेश के युवाओं को भारत के प्रमुख जैन पुस्तकालयों में, उनके प्रवास स्थलों पर सामग्री संगृहीत करने भेजा, प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर जी छाणी जी के सान्निध्य में रहे सुधी श्रावकों, विद्वानों से साक्षात्कार लिया। उससे जो भी सामग्री एकत्रित हुई, उससे एक स्मारिका

की रचना हुई।

उपाध्याय श्री ज्ञानसागर जी महाराज के सान्निध्य में सन् 1990 में बुढ़ाना नगर में अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्री परिषद का अधिवेशन सम्पन्न हुआ। उस अधिवेशन में प्रशम मूर्ति आचार्य 108 श्री शांतिसागर जी छाणी स्मृति ग्रंथ तैयार करने का संकल्प लिया गया। 5 विद्वानों को सम्पादन का कार्य सौंपा गया।

गया (बिहार) में उपाध्याय ज्ञानसागर जी के वर्षायोग के अवसर पर 1992 में एक सेमिनार आयोजित हुआ जिसमें देश के 50 विद्वान आये। सेमिनार में भी कुछ लेख आये, उनको स्मृति ग्रंथ में समाहित किया गया। इस अवसर पर प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी स्मारिका का विमोचन हुआ। मेरठ प्रवासी पं. महेन्द्र कुमार 'महेश' ऋषभदेव केसरिया निवासी जिनको छाणी महाराज के सान्निध्य में रहने का अवसर मिला था, उन्होंने और ब्रह्मचारी भगवानदास ने आचार्य शांतिसागर छाणी महाराज का जीवन परिचय लिखा था। उसको आधार

बनाकर डॉ. कस्तूरचन्द जी कासलीवाल ने भी आलेख तैयार किया। पं. नीरज जी ने भी सविनय नमोस्तु नाम से एक आलेख लिखा था, वह समीक्षात्मक आलेख पठनीय है।

आचार्य श्री के परिचय हेतु प्रस्तुत लघु पुस्तिका के लिए मैंने प्रशममूर्ति आचार्य शांतिसागर जी स्मृति ग्रंथ से संक्षिप्त सामग्री संकलित की है। आचार्य शांतिसागर जी छाणी की परम्परा के उस समय से लेकर आज तक जितने साधु-संत हुए हैं और अभी हैं, उनको सूचीबद्ध करने का प्रयास किया है, इसमें कुछ ही साधु-संत छूट गये होंगे, शेष सभी का क्रमबद्ध सूचीकरण कर दिया है। कुछ संघ तो ऐसे थे जिनके सम्बन्ध में हमें खुद मालूम नहीं था कि यह संघ छाणी परम्परा का है। इसमें छाणी परम्परा के साधु संतों ने कुछ विशिष्ट कार्य किये हैं - शिक्षालय, पुस्तकालय, आश्रम, नये क्षेत्र आदि, कोई भी संस्था उनकी प्रेरणा से संचालित है उनको भी यहां पर सूचीबद्ध किया है, जिससे जिज्ञासु पाठकों के लिए छाणी परम्परा को एवं उनके द्वारा किये गये अवदानों को समझने में

सुविधा होगी।

आर्यिका स्वस्तिभूषण माता जी ने पांडुलिपि को पढ़कर महत्वपूर्ण उपयोगी सुझाव दिये जिससे इस लघुकृति का नया रूप निखरकर आया है। गणिनी आर्यिका श्री स्वस्तिभूषण माता जी एवं क्षुल्लिका अर्हत्मति माता जी के आशीर्वाद एवं ब्र. प्रियंका दीदी के निर्देशन और सहयोग से यह संकलित सामग्री प्रकाशित हो पाई है। इस कार्य में श्री मुनिसुव्रतनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र (स्वस्तिधाम) जहाजपुर का भी भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ। श्री स्वस्ति कल्याण समिति ने इसे प्रकाशित किया, मैं उनका भी आभारी हूँ। छाणी परम्परा के साधुओं की सूची में भूल हुई हो, या कोई नाम अथवा अन्य सामग्री भूल के कारण छूट गयी हो, तो उसे क्षमा करना एवं सूचित करने की कृपा करना।

–ब्र. मनीष जैन 'ज्ञान', जहाजपुर

जीवन परिचय
उत्तर भारत के प्रथमाचार्य प्रशम मूर्ति आचार्य 108 श्री शांतिसागर जी महाराज (छाणी)

भारत में मुस्लिम आतंगताइयों, लुटेरों के आक्रमणों से हमारी भूमि रक्त रंजित हो गई, हिन्दू राजाओं की फूट स्वार्थ वैमनस्यता का फायदा उठाकर वे हमारे देश के शासक बन गए, पहले हिन्दू जैन संस्कृतियाँ हमारे भारत देश को हजारों वर्षों से शिरमौर बनाये हुई थीं, सबसे ज्यादा आघात दिगम्बर जैन श्रमणों मुनियों को हुआ। उन्हें मार दिया गया, उनका बाहर निकलना मुश्किल हो गया, धर्म परिर्वतन किया गया, मन्दिर मूर्तियों को तोड़ा गया, मूर्तियों को बचाने हेतु श्रावकों ने जमीन में सुरक्षित कर दिया। सबसे अशांत उत्तर भारत रहा।

तीन आचार्य परम्पराएंः- उन्नीसवीं शताब्दी का अंतिम समय एवं 20 वीं शताब्दी का प्रारम्भिक समय धर्म जागरण का समय रहा। दिगम्बर जैन परम्परा

में तीन महापुरुषों ने मुनि परम्परा का शुभारम्भ किया। जिसमें दक्षिण भारत के मुनि कुंजर आचार्य श्री आदिसागर जी अंकलीकर ने ई. सन् 1913 में मुनि दीक्षा ली, चारित्र चक्रवर्त्ती आचार्य शांतिसागर जी महाराज दक्षिण ने ई. सन् 1920 में मुनि दीक्षा ली एवं प्रशम मूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज छाणी उत्तर ने ई. सन् 1923 में मुनि दीक्षा ली, आज इन्हीं तीन आचार्यों की परम्परा के साधु भारत वर्ष में साधना / प्रभावना कर रहे हैं। इन्हीं महापुरुषों के कारण हम सब साधु संतों के दर्शन कर पा रहे हैं। ये तीनों परम्परायें उस गुलदस्ते के समान हैं जिस में अलग-अलग रंग, प्राकृतिक सुगंध के पुष्प रहते हैं उनमें आपसी कोई भेद नहीं रहता, तभी गुलदस्ता शोभायमान होता है। ये हमारी आचार्य परम्परा का गुलदस्ता है। तीनों आचार्य महत्वपूर्ण हैं, आदरणीय पूजनीय हैं। ये हमारी धरोहर हैं।

इसके अलावा उस समय में और भी प्रभावक पुरुष हुए, जिनमें श्री क्षु. गणेश प्रसाद वर्णी जी, क्षु. मनोहरलाल वर्णी जी, ऐलक पन्नालाल जी, काहनजी

स्वामी जी, पं. गोपालदास जी बरैया, ब्र. शीतलप्रसाद जी आदि ने जैन धर्म का खूब प्रचार-प्रसार किया। ग्रंथों का प्रकाशन, संरक्षण, संपादन, हिन्दी अनुवाद, पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन, सरस्वती भण्डारों का निर्माण, शिक्षा केन्द्रों का निर्माण, अखिल भारतीय संस्थाओं का गठन, विद्वानों की संख्या में वृद्धि के साथ मुनियों का निर्बाध विहार होने से समाज में अनायास अति जागृति आ गई।

छाणी ग्रामः- वीरों की भूमि मेवाड़ राज्य के बागड़ प्रांत के उदयपुर जिले में खेरवाड़ा तहसील में छाणी एक छोटा-सा ग्राम है। पहले यहाँ कच्चे मकान जो घास-फूँस के छप्पर/छानी से बने थे, इसलिए इस ग्राम का नाम छाणी हुआ। अभी ग्राम से 3-4 किलोमीटर की दूरी पर छोटी पहाड़ी है, जिस पर 400 वर्ष प्राचीन महावीर जिनालय है। पहले छाणी ग्राम यहीं था, आक्रमणकारी लुटेरों से बचने के लिए, ग्राम के सभी लोग कुछ दूर चले गये। क्योंकि यह स्थान मेवाड़ और गुजरात की सीमा पर स्थित है इसलिए यहां हमेशा अशांति रहती थी, यह क्षेत्र खड्ग क्षेत्र कहलाता है। खड्ग क्षेत्र में चार, पाँच, छह किलोमीटर

के अंतर पर 14 जैन ग्राम हैं। इस क्षेत्र में हूमड दशा, हूमड बीसा, नरसिंगपुरा, नागदा, चित्तौड़ा आदि जैन जातियाँ निवास करती हैं।

इस ग्राम में दशा हूमड़ समाज के श्री भागचन्द जी शाह गोत्र - बुद्धेश्वर, धर्मपत्नी माणिकबाई, दो पुत्री फूलीबाई, रतनबेन, भाई के लड़के खुम जी भी इसी परिवार में पुत्रवत् थे। छोटी-सी दुकान थी। उसी से हँसी-खुशी घर चल रहा था, घर में ही गाय-भैंस होने से दूध, घी, ईधन घर में ही हो जाता था। ग्रामों में स्वावलंबी जीवन होने से आवश्यकताएँ कम होती हैं, इसलिए जीवन में शांति होती है।

केवलदास का जन्मः- श्री भागचन्द जी के घर कार्तिक बदी ग्यारस वि. सं. 1945 ई. 31 अक्टूबर सन् 1888 के शुभ दिन पुण्यात्मा पुत्र का जन्म हुआ, नाम रखा केवलदास। पुत्र जन्म से पूरा गाँव खुशी से झूम उठा। माता-पिता को पुत्र के सम्बन्ध में बड़ी कल्पनायें रहती हैं, पुत्र बड़ा होगा। शादी होगी, व्यापार करेगा, कुलदीपक है बुढ़ापे का सहारा बनेगा। पुत्र बड़ा हो रहा था,

पर उसकी प्रकृति ही अलग थी, वह संवेदनशील, दयालु, समतावान, धैर्यवान, साहसी था, जीवन में धार्मिकता झलकती थी, गाँव में स्कूल तो था नहीं, व्यापार के लिए जोड़ बाँकी, गुणा, भाग सीख लिया, पूजा-पाठ की पुस्तक पढ़ना आ गई, पहले इतनी शिक्षा काफी होती थी। केवलदास को भी व्यापार करने योग्य शिक्षा घर पर ही मिल गई थी, इसलिए किशोरवय में ही दुकान संभालने लगे थे, 15 वर्ष की आयु में एक जगह नौकरी भी करने लगे।

दया के सच्चे पुजारीः- महापुरुषों का जीवन अनोखा होता हैं। उनके जीवन में दया का समावेश वैसा ही होता है जैसे पुष्प में सुगंध का। ग्राम के बच्चे गाय, भैंस, कुत्ता आदि पशुओं को अकारण लाठी से पीटते एवं पत्थर मारते थे, यह देख केवलदास का मन दुःखी हो जाता था, उन्होंने बच्चों को समझाया। पशुओं को मारने से उन्हें कष्ट होता है, जैसा हमें मारने से कष्ट होता है उन्हें भी वैसा ही कष्ट होता है। उनका जीवन भी हमारे जैसा ही है। इस बात का प्रभाव बच्चों पर पड़ा, बच्चों ने पशुओं को तंग करना, मारना-पीटना बंद कर

दिया। इस बात से पूरे गाँव में केवलदास की प्रशंसा होने लगी।

वैराग्य की ओरः- इनके एक बहनोई गुलाबचन्द पानाशाह बांकानेर गुजरात के थे। जब भी छाणी आते, साथ में एक शास्त्र लेकर आते। उसका स्वयं स्वाध्याय करते और केवलदास को सुनाते। एक बार नेमिनाथ पुराण लाये, नेमिनाथ का वैराग्य प्रसंग आया, इस घटना से केवलदास विरक्त हो गये। वैराग्य मन में हिलोरे लेने लगा। उनकी जिनेन्द्र भगवान के प्रति अटूट श्रद्धा जागृत हो गई। छाणी में पं. रूपचन्द पंचोली थे, उनके पास रोज शास्त्र सुनने जाते। वह जो सुनते उसे जीवन में धारण करने का प्रयास करते। संसार से विरक्त होने लगे, तभी उन्हें केसरिया जी में श्री ऋषभदेव भगवान के दर्शन के भाव हुए। वहाँ पहुँचकर दर्शन पूजन करते समय भाव जागृत हुआ कि यह गृहस्थ जीवन दुःखों से भरा है, इसमें उलझने के बाद कोई भी निकल नहीं पाता। ऐसा विचार कर उन्होंने भगवान के समक्ष **आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत ले लिया एवं एक समय शुद्ध भोजन करने का नियम** ले लिया। जब घर आये तब माता-पिता को केवलदास

की प्रतिज्ञा ज्ञात हुई। तब माता-पिता, परिवार एवं ग्रामवासियों ने बहुत समझाया। डाँट-डपट लगाई पर केवलदास अटल रहे, उन पर इन बातों का कोई असर नहीं हुआ।

अहिंसा के प्रतिमूर्तिः- केवलदास धर्म के प्रति जितने निष्ठावान थे उतने ही कर्तव्यपरायण भी थे। घर में गाय, भैंस आदि थे, केवलदास से एक दिन माँ ने नौकर न आने के कारण बांटा डालने को कहा, बांटा का मतलब विविध प्रकार के अनाजों को पीसकर खल के साथ पानी में भिगोकर भूसे में मिलाकर पशुओं को खिलाया जाता था। उन्होंने देखा पिसे हुए बांटा में बहुत जीव पैदा हो गये हैं। उन्हें दुःख हुआ बिना देखे, कितनी हिंसा होती है, उन्होंने एक चालनी (छलनी) से चालकर जीवों को निकाला तब बांटा पानी में डाला। यह बात माता-पिता को सुनाई और कहा बांटा ज्यादा दिन का पिसा नहीं होना चाहिए जिससे उसमें जीव पैदा नहीं होंगे, बांटा 10 दिन से ज्यादा का पिसा ना हो। ग्राम के अन्य लोगों को भी समझाया। सम्पूर्ण ग्राम में घर-घर जाकर लोगों को

समझाया सभी ने केवलदास की बात मान ली। फिर आस-पास के ग्रामों में जाकर लोगों को समझाया। लोग केवलदास की धर्म के प्रति अटूट श्रद्धा और जीवों के प्रति करुणा भाव से प्रभावित हुए। अहिंसा एक ऐसा चक्र है, जिसके होने पर अन्दर की आँखें खुल जातीं हैं, व्यक्ति जीवों की विराधना से बचने लगता है। पाप से डरने लगता है।

स्वाध्याय की लगनः- मुम्बई निवासी इनके एक सम्बन्धी लल्लूभाई लक्ष्मीचन्द चोकसी व प्रेमचन्द जी, मोतीचन्द जी की धर्मपत्नी चम्पाबाई के लड़के रतनचन्द जी विषापहार स्तोत्र, आलोचना पाठ एवं रत्नकरण्ड श्रावकाचार की एक-एक प्रति लाये और केवलदास को भेंट की क्योंकि वह केवलदास के धार्मिक आचरण को देखकर उनको बड़ी निधि भेंट करना चाहते थे। केवलदास को भी यह ग्रंथ पाकर ऐसा आनंद आया कि मानो रत्नों से भरा पात्र मिल गया हो।

माता का स्वर्गवासः- जब केवलदास 29 वर्ष के थे, तब उनकी माता का स्वर्गवास हो गया। केवलदास एक दिन शास्त्र सुन रहे थे, उसमें नन्दीश्वर व्रत

का उल्लेख आया, उन्होंने नन्दीश्वर व्रत का नियम ले लिया। इस व्रत में 108 दिन में 56 उपवास एवं 52 पारणा करने होते हैं। नन्दीश्वर व्रत को बड़े मनोयोग से उत्साहपूर्वक पूर्ण किया। आत्मा में निर्मलता आयी। संयम के प्रति लगाव बढ़ गया।

एक दिन केवलदास को स्वप्न आया कि वह सम्मेदशिखर की यात्रा कर रहे हैं, और श्रवणबेलगोला में जाकर अधिक मात्रा में द्रव्य चढ़ाकर पूजा कर रहे हैं।

सम्मेदशिखर की यात्राः- एक दिन पिताजी से सम्मेदशिखर की यात्रा पर जाने हेतु निवेदन किया, पिताजी ने कहा शादी कर लो तो मैं सम्मेदशिखर जी जाने की अनुमति दे दूँगा, पर केवलदास ने कहा मैंने शादी न करने का संकल्प कर लिया है, चाहे प्राण भी क्यों न चले जायें पर उसे कभी नहीं तोडूँगा। आखिर में पिता जी ने विवश होकर अनमने मन से मार्गव्यय के लिए केवल पाँच रुपये दिये। केवलदास ने कुटुम्बीजन एवं रिश्तेदारों के पास जाकर सम्मेदशिखर जाने

की आज्ञा ली और सबसे कहते गये कि अब मैं लौटकर घर नहीं आउँगा, सभी हमें क्षमा करें एवं हम सबको क्षमा करते हैं। वहाँ जाकर व्रत ग्रहण करूँगा।

सभी ने कुछ-कुछ रुपये दिये। कुल 22 रुपये लेकर यात्रा प्रारम्भ की, छाणी से केसरिया जी गये। वहाँ से उदयपुर, फिर अजमेर, मथुरा, वाराणसी, ईसरी होते हुए सम्मेदशिखर पहुँचे। पहुँचने के दूसरे दिन प्रथम वंदना को निकले, वंदना करते हुए परिणामों में निर्मलता आई, तीसरे दिन दूसरी वंदना में सोचने लगे मनुष्य जीवन पाकर व्रत धारण करना चाहिए, यह मनुष्य जीवन व्यर्थ चला जायेगा, तीसरी वंदना हेतु पर्वत पर गौतम गणधर की टोंक से लेकर सभी टोंकों पर स्थित चरणों की वंदना करते जा रहे थे और कहते जा रहे थे कि आज पार्श्वनाथ टोंक पर बारहव्रत एवं सात प्रतिमा लेने जा रहा हूँ। आप सब वहाँ पधारें। यह उनकी तीर्थंकरों के प्रति भक्ति थी क्योंकि भक्त भगवान को ही सब कुछ मानता है, भक्ति के समय प्रभु को ही कर्ता-धरता, माता-पिता, बंधु-सखा सब आप ही हैं ऐसा मानता है।

सप्तम् प्रतिमा धारी केवलदासः- श्री पार्श्वनाथ की टोंक पर जाकर पहले अत्याधिक भक्ति-भावपूर्वक पूजा की, ध्यान लगाया और 1 जनवरी 1919 के शुभ दिन सात प्रतिमा पालन करने का संकल्प ले लिया, परिग्रह की मर्यादा में 5रु से ज्यादा न रखने का संकल्प ले लिया (यात्रा खर्च के अलावा) गृह त्याग दिया। दो धोती को छोड़ सभी कपड़े लोगों को दे दिये। अब इनके पास केवल तीन रुपये शेष बचे, बड़ी कोठी के मुनीम जी ने पावापुर की वंदना के लिए डेढ़ रुपये दिये। वहाँ से राजगृही की वंदना के लिए गये। वहाँ से वाराणसी के लिए रवाना हुए। वाराणसी में स्याद्वाद महाविद्यालय में छह दिन रुके। वहाँ के मंत्री जी ने 15 रुपये और ठंड में ओढ़ने हेतु एक धुस्सा (मोटा चादर) दिया और बॉम्बे का टिकट बनवा दिया। वाराणसी से बॉम्बे पहुँचे वहाँ सेठ माणिकचन्द जी, पानाचन्द जी, प्रेमचन्द जी, मोतीचन्द जी के मकान में ठहरे। वहाँ लल्लूभाई लखमीचन्द ने आपको आहार कराया और पाँच रुपये टिकट को दिये तथा चम्पाबाई ने दो धोती एवं दो रुपये मार्ग व्यय हेतु प्रदान किये। वहाँ से ईडर

गये, ईडर में पहाड़ी पर स्थित मंदिर के दर्शन किये और वहाँ से गोरेला आये। गोरेला में श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान के दर्शन किये। वहाँ से बांकानेर अपने बहनोई के ग्राम आये। यहाँ चार दिन मन्दिर जी में रुके।

छाणी ग्राम की तरफ प्रस्थानः- फिर अपने बहनोई पानाचन्द जी के साथ छाणी आये। छाणी में केवलदास जी ग्राम के कुछ दूर पहाड़ी के श्री महावीर जिनालय में ठहर गये। पानाचन्द जी छाणी ग्राम में गये, वहाँ जाकर ग्रामवासियों को बताया कि केवलदास जी ने सम्मेदशिखर जी में सात प्रतिमा धारण कर ली हैं, और यहाँ आये हैं। अब वे ब्रह्मचारी हो गये हैं। ग्राम के सभी जैनी भाई गाजे-बाजे के साथ जाकर, धूम-धाम से उनको ग्राम के मंदिर जी में ले आये। ग्राम में एक त्यागी को देखकर खुशी व्याप्त हो गई। दूसरे दिन रूपचन्द पचौरी के यहाँ आहार हुआ। आहार कराकर उन्होंने रत्नकरण्ड श्रावकाचार की बड़ी टीका भेंट की। तब आठ-दस दिन रूपचन्द जी ने वह ग्रंथ पढ़ाया। इसके पश्चात् छाणी के आस-पास के 14 ग्रामों में भ्रमण करते हुए प्रभावना की।

माता का स्वर्गवास हो चुका था। पिताजी कभी मंदिर नहीं जाते थे, रात्रि में भोजन करते थे। अतः समझा-बुझाकर पिताजी को साथ ले गये।

गिरनार जी की यात्राः- वहाँ से श्री गिरनार जी यात्रा पर साथ ले गये। गिरनार जी के पर्वत पर पिता जी को सप्त व्यसन, रात्रि भोजन का त्याग कराया एवं नित्य मंदिर जाकर भगवान के दर्शन करने का संकल्प कराया। यहां से चोरीवार चले गये, पिताजी को घर भेज दिया। चोरीवार से गोरेला आ गये, यहाँ पर ऐलक पन्नालाल जी आये। ऐलक जी के साथ जैनागम पठन हेतु महाराष्ट्र के बारामती शोलापुर की तरफ चले गये। एक माह ऐलक जी के साथ रहे, पर कुछ अध्ययन नहीं हो पाया। इसलिए लौटकर गोरेला चले आये।

ब्र. केवलदास का चातुर्मासः- गोरेला में चातुर्मास किया। यहाँ पर **भाद्रपद में 17 उपवास किये।** इन 17 उपवासों के बीच केवल तीन बार पानी लिया। फिर अष्टानिका पर्व में भी आठ दिन के आठ उपवास किये। वहाँ से केसरिया जी आये, कुछ दिन ठहरकर सागवाड़ा की ओर चल दिये। सागवाड़ा प्राचीन

मंदिरों का शहर है। पहले साधु-संतों के दर्शन तो होते नहीं थे, न ही किसी के उपदेश सुनने को मिलते थे, इसलिए ब्र. केवलदास जहाँ भी जाते नगर-नगर, ग्राम-ग्राम स्वागत होता, प्रवचन श्रवण के लिए जैनाजैन की भीड़ लग जाती। इनके जीवन में केवल धार्मिकता थी, नाम ख्याति की चाह तो थी नहीं। ज्यादा अध्ययन तो था नहीं, पर जितना था वह पूर्ण अतिचार रहित आचरण में झलकता था। लोभ-लालच तो था ही नहीं, निस्पृहवृत्ती जीवन में झलकती थी। सीधे सटीक प्रवचनों का प्रभाव जनता पर सीधा पड़ता था। इस प्रकार ग्राम-ग्राम भ्रमण से नये अनुभव हो रहे थे। समाज में जो बुराइयाँ व्याप्त हैं, उनका भी अनुभव हो रहा था। उनको दूर करने का भी उपाय सोचा करते एवं लोगों को उपदेश देते।

सर्प ने कुछ नही कियाः- एक दिन ब्र. केवलदास का उपवास था, तख्त पर लेटने जा रहे थे, उन्होंने देखा एक बड़े सर्प के पीछे कुत्ता दौड़ता हुआ इनकी तरफ आ रहा है। कुत्ता तो दूर भाग गया, पर सर्प इनके तख्त के नीचे बैठ

गया। ये ध्यान में लीन हो गये, बाद में सर्प चला गया।

चातुर्मास की समाप्ति पर गाँव वालों ने गोम्मटेश्वर की यात्रा की, यात्रा के पश्चात् आस-पास के ग्रामों में प्रभावाना की।

दूसरा चातुर्मास ईडर में किया, पं. नंदलाल जी से कुछ ग्रंथों का अध्ययन किया। पूरे चातुर्मास में 32 उपवास किये। यहाँ चतुर्दशी को फिर दो स्वप्न दिखाई दिये। जो कुछ अंश में सच साबित हुए।

चातुर्मास की समाप्ति पर वहाँ के समाज ने तीर्थ यात्रा हेतु खर्च का प्रबन्ध कर दिया।

तीर्थयात्राः- सर्वप्रथम वहाँ से आबू गये। वहाँ पर ब्र. शीतल प्रसाद जी एवं दिल्ली का संघ मिल गया। संघ के साथ तारंगा जी गये, वहाँ से गिरनार जी, शत्रुंजय, पावागढ़, बडौदरा, सूरत होकर बॉम्बे गये, पुणे से रेल द्वारा सिमोगा से मूडबिद्री में रत्न प्रतिमा एवं षट्खंडागम की ताड़पत्राीय प्रति के दर्शन किये। वहाँ से कारकल वेणूर, धर्मस्थल, श्रवणबेलगोला को भावपूर्वक वंदन करके हुबली

से सोलापुर होते हुए कुंथलगिरी से पुणे, नासिक, गजपंथा, मांगीतुंगी से दिल्ली, हस्तिनापुर के दर्शन करते हुए दिल्ली होते हुए कानपुर आये। यहाँ पर महासभा का अधिवेशन हो रहा था, उसमें भाग लिया। यहाँ समाज के नेताओं से मिले। कानपुर से सम्मेदशिखर की तीन वंदना की वहाँ से गिरिडीह होते हुए कलकत्ता गये, वहाँ बेलगछिया में छह दिन रुककर धर्म प्रभावना की। वहाँ से चम्पापुर, गुणावा, कुण्डलपुर, पावापुर, राजगृही, बनारस से अयोध्या, कानपुर, झाँसी होते हुए सोनागिर की वंदना की। वहाँ से मथुरा चौरासी में जम्बूस्वामी की निर्वाण स्थली के दर्शन करके जयपुर गये। वहाँ से अजमेर से अहमदाबाद से ईडर आ गये, ईडर में चातुर्मास किया और दशलक्षण पर्व में 10 उपवास किये। फिर चातुर्मास के बाद आस-पास के ग्राम-ग्राम जाकर प्रभावना की। फिर सागवाड़ा आये वहाँ से परतापुर, नौगमा, बागीदौरा आदि ग्रामों से गढ़ी ग्राम आये।

गढ़ी में कस्तूरचन्द जी ने अढ़ाई द्वीप मण्डल विधान कराया। ब्र. केवलदास जी ने विधान में सान्निध्य दिया, प्रवचन किये। यहाँ आप 22 दिन ठहरे। यहाँ आपने **पाँच स्वप्न** देखे।

1. मारने दौड़ती हुई गाय को आपने पकड़कर बस में कर लिया।
2. सूत की मालाएँ देखीं।
3. काष्ठ कमण्डल देखा।
4. जैनों के समूह को मंदिर जाते देखा।
5. स्वयं, प्रभु के दर्शन करते हुए दिखे।

क्षुल्लक दीक्षाः- उक्त स्वप्नों के पश्चात् उस दिन उपवास किया एवं केशलोंच करके भगवान के समक्ष सन् 1922 में क्षुल्लक दीक्षा ले ली। नाम हुआ 'क्षुल्लक श्री शांतिसागर जी'। चूँकि उस समय कोई साधु-संत उपलब्ध नहीं थे इस कारण भावों के अतिरेक से भगवान को ही गुरु मानकर दीक्षा ली। ब्र. केवलदास जो कुछ स्वाध्याय करते थे, उसे अपने आचरण में उतारते चले जाते थे, साधना तो उनकी पहले से चल रही थी, एक समय आहार करना, उपवास आदि करना, केशलोंच करना आदि इसलिए उन्हें कोई अलग से पुरुषार्थ नहीं करना पड़ा।

जब आत्मा की पहचान हो जाती है, तब उपयोग बाहरी वस्तुओं से हटकर

आत्मा की तरफ आ जाता है, तभी दीक्षा लेने के भाव होने लगते हैं। अहिंसा को जीवन में अवतरित करने के लिए व्रत लेना ही सार्थक कदम होता है, व्रतों से ध्यान की साधना प्रगाढ़ होती है एवं हिंसा में न्यूनता आ जाती है। उनका मन महाव्रत धारण करने को तड़प रहा था, नीचे से ऊपर चढ़ना श्रेष्ठ समझा। क्षुल्लक दीक्षा धारण करके निर्दोष चर्या पालन करने में उनका पूरा उपयोग रहता था।

32 उपवासों की तपस्याः- प्रतापगढ़ समाज के आग्रह पर वहाँ चातुर्मास किया। यहाँ आपने एक साथ 32 उपवास किये, भाद्रपद चतुर्दशी के दिन, रात में जब मन्दिर बंद थे। मन्दिर के अन्दर से **तीन बार नगाड़े बजने की आवाज आई,** जिसे आस-पास के ग्रामवासियों ने भी सुना। अगले दिन मगनी बाई के यहाँ पर पारणा हुआ। नगर में खूब प्रभावना हुई। गाँव में प्लेग की बीमारी फैल रही थी, नगाड़ों के शब्द के बाद **महामारी खत्म हो गई।** चातुर्मास समाप्ति के पश्चात् अरथूना क्षेत्र गये, वहाँ से बुकिया ग्राम के जागीरदार ने आकर कहा कि 'उनके गांव में 400 वर्ष प्राचीन मन्दिर है, उसकी मूर्ति खण्डित हो गई है'

जागीरदार से मांसाहार का त्याग कराया, उसने मूर्ति स्थापना हेतु 500 रुपये दिये। पं. नंदलाल जी ने प्रतिमा को विराजमान कराया। मन्दिर जी के शिखर पर सोने का कलश चढ़ाया। केशलोंच हुए, इस कार्यक्रम में लगभग पाँच हजार लोग एकत्रित हुए, भीलों ने मांसाहार का त्याग किया एवं ठाकुर ने नित्य देव दर्शन का नियम लिया और पूजा-पाठ हेतु 6 बीघा जमीन मन्दिर को दी। वहाँ से विहार किया रास्ते के गांवों में प्रवचन किये, मांसाहार का त्याग कराया। छाणी ग्राम में सरस्वती भण्डार खुलवा दिया। उससे 14 ग्रामों के लोगों को लाभ मिलने लगा।

तत्पश्चात् सागवाड़ा आकर वहाँ चातुर्मास किया। वहीं शुभ मुहूर्त में श्रावण शुक्ल पूर्णिमा सन् 1923 में 'श्राविका आश्रम' की स्थापना कराई।

मुनिदीक्षाः- चातुर्मास के मध्य भाद्रशुक्ल चतुर्दशी सन् 1923 के दिन परिणाम अत्यंत निर्मल हुए और श्री आदिनाथ स्वामी के समक्ष सैकड़ों भक्तों के सामने जाकर स्वयमेव सर्व परिग्रह का त्याग कर, निर्ग्रंथ दिगम्बर दीक्षा ले

ली और नाम हुआ 'मुनि श्री शांतिसागर जी'। यहां से कुछ दूर पहाड़ी पर जाकर मुनि श्री ने 6 घंटे तक लगातार ध्यान किया।

मुनि दीक्षा के पश्चात् लोगों ने कहा कि आज का समय दिगम्बर मुद्रा में विहार करने का नहीं है। आप वस्त्र धारण कर लें। मुनिश्री ने कहा कि 'भाइयों, वमन करके फिर ग्रहण नहीं किया जाता है'। तो फिर दिगम्बर होकर अंबर कैसे धारण कर सकते हैं। हमारा संकल्प है हम पीछे नहीं हट सकते'।

चातुर्मास समाप्ति के समय समाज के प्रबुद्ध श्रावकों ने मुनि श्री का नाम चिरस्थाई बनाने हेतु महिला आश्रम का नाम 'श्री मुनि शांतिसागर जी दिगम्बर जैन महिलाश्रम, सागवाड़ा' रख दिया। इसके पश्चात् विहार खडगदा ग्राम की ओर किया। नगर के बाहर नदी के किनारे एक क्षेत्रपाल का मन्दिर है, वहाँ आदिनाथ भगवान की प्राचीन प्रतिमा चूने से ढकी है। भील लोग सिंदूर और वर्क लगाते थे। वहाँ पर पशुओं की बलि देते थे। जैन समाज ने प्रतिमा को चूने के पटाने से बाहर निकलवाया। मुनि श्री से प्रश्न किया यह प्रतिमा खण्डित

है या अखण्ड है। मुनि श्री शांतिसागर जी ने कहा यह मूर्ति अखण्ड है, कल इसका अभिषेक पूजन होगा, बड़े धूमधाम से अभिषेक पूजन हुआ। डूंगरपुर सरकार से कहकर पशुओं की बलि रूपी हिंसा को बंद करा दिया। भीलों से मांस मदिरा का त्याग कराया। वर्तमान में एक जैन अतिशय क्षेत्र के रूप में यह स्थान बन गया है।

कुप्रथाओं पर प्रहारः- मुनि श्री ने बागड़ प्रांत के अनेक नगरों-ग्रामों में विहार करके समाज में व्याप्त कुरीतियाँ, अज्ञानता के कारण रूढ़िवादी पाखंडी, हिंसक परम्पराओं को बंद कराने का आंदोलन चलाया। बाल विवाह, छाती पीटने की परम्परा (परिवार में मृत्यु होने पर कई माह तक छाती पीट-पीटकर जोर-जोर से रुदन करना) सती प्रथा, विधवाओं पर अनेक तरह के प्रतिबंध, कन्या विक्रय, बूढे व्यक्तियों का विवाह 10-12 वर्ष की कन्या से करना। उस समय महिला शिक्षा भी बड़ी समस्या थी।

जहाँ भी मुनि श्री शांतिसागर जी का विहार होता, हजारों की संख्या में

लोग उनके दर्शन, वंदन करने आते थे, क्योंकि प्रथम बार किसी दिगम्बर मुनि के दर्शन कर रहे थे। उनके उपदेशों का लोग मनसा, वचसा से पालन करते। उस समय श्रावकों के आचार में शिथिलता आ गई थी, मुनिश्री ने रात्रि भोजन त्याग, प्रतिदिन अभिषेक पूजन करना, सप्तव्यसन का त्याग, दान करना आदि छोटे-छोटे नियम दिलाये, स्वाध्याय का नियम दिलाते थे, जगह-जगह सरस्वती भण्डार बनवाये। इस तरह विहार करते हुए आगे जा रहे थे कि उनके पैर में चोट लग गई, पर उसे परिषह समझकर शांति से सहन किया, चिंतन किया यह तो पूर्व में किये कर्म का उदय है और यह तो कर्म निर्जरा का संयोग है। ग्राम चखाचरोद होते हुए आप चन्द्रावल आये यहाँ मुनि श्री चन्द्रसागर जी का संयोग मिला, अब दोनों साथ-साथ विहार करने लगे। अनेक ग्रामों से विहार करते हुए।

इन्दौर में निर्बाध विहारः- इन्दौर पधारे, इन्दौर में अंग्रेज सरकार द्वारा मुनियों का विहार निषिद्ध था, सरसेठ हुकुमचन्द ने सरकार से यह आदेश रद्द कराया

एवं अपने आवास पर चौका लगाकर आहार दिया, जिससे दिगम्बर साधुओं का आवागम बाधा मुक्त होने लगा। दोनों मुनि इन्दौर छावनी आये, यहाँ मन्दिर की प्रतिष्ठा हो रही थी, वहाँ आपके उपदेश हुए। वहाँ से खंडवा होते हुए बडवानी के लिए प्रस्थान हुआ।

यात्री वाहन चढ़ाने का प्रयासः- बड़वानी में कुछ विधर्मी लोग दिगम्बर मुनि को देखकर आक्रोशित हो गये, इनका आगमन उन्हें खटक रहा था। उन्होंने ध्यान में बैठे मुनिराज को कुचल कर मारने के लिए उनकी तरफ मोटर (यात्री वाहन) बढ़ा दी। पर मुनिराज ध्यान में अचल रहे। एक चमत्कार हुआ कि वाहन (मोटर) बंद हो गई और टूट गई। पुलिस ने अपराधियों को पकड़ कर मुनिश्री के समक्ष उपस्थित किया और कहा कि क्या सजा दी जाये, मुनिश्री ने कहा 'इन्हें क्षमाकर दिया जाये, क्षमा करना ही मुनियों का धर्म है'

अपराधियों ने मुनि श्री के चरण पकड़ लिये और कहा कि ऐसे होते हैं दिगम्बर मुनि, जो किसी के प्रति रोष नहीं करते।

बाबनगजा (चूलगिरी) से अनेक ग्राम नगरों में प्रभावना करते हुऐ केसरिया जी आये, यहाँ पर वहाँ के चौकीदारों ने कमण्डलु छीन लिया। मुनिश्री अनशन पर बैठ गये। तब कहीं कमण्डलु सहित मन्दिर जी में प्रवेश करने दिया।

मुनि अवस्था का प्रथम चातुर्मासः- इन्दौर चातुर्मास हेतु केसरिया जी से विहार किया। अनेक नगर ग्राम होते हुए इन्दौर नगर पधारे। सरसेठ हुकुमचन्द जी मुनिश्री के भक्त थे। मुनिश्री के अध्ययन हेतु विद्वानों की व्यवस्था की। प्रतिदिन प्रवचन के अलावा रविवार को साप्ताहिक प्रवचन होते थे, जिसमें विद्वानों के एवं मुनिश्री के उपदेश होते थे। यहाँ पर मुनि श्री का विशेष अध्ययन चल रहा था एवं विद्वानों द्वारा तत्वचर्चा मिलने से इन्दौर नगर का नाम इन्द्रपुरी रख दिया। दशलक्षण पर्व पर मुरैना से पं. माणिकचन्द जी न्यायाचार्य श्री लखमीचन्द लश्कर से आये थे। बहुत अधिक प्रभावना हुई।

सूर्यसागर जी की ऐलक दीक्षाः- श्री हजारीलाल जी प्रेमसर जिला-ग्वालियर के निवासी थे। इनको इन्दौर में असोज शुक्ल षष्ठी सन् 1924 में मुनिश्री ने

ऐलक दीक्षा दी, नाम ऐलक श्री सूर्यसागर जी रखा गया।

बडवानी में नंदकिशोर जी ने भगवान के समक्ष मुनि दीक्षा ली, मुनिश्री ने इन्दौर से पिच्छी कमण्डलु भेजा, विद्वान भी भेजे। नाम हुआ 'मुनि श्री आनंदसागर जी'।

इन्दौर से विहार कर हाटपिपल्या आये, यहाँ मुनि श्री शांतिसागर जी महाराज ने मार्गशीर्ष कृष्ण 11 सन् 1924 में हाटपिपल्या में ऐलक श्री सूर्यसागर जी को मुनि दीक्षा प्रदान की, नाम रखा 'मुनि श्री सूर्यसागर जी'। मुनि सूर्यसागरजी को सन् 1928 में कोडरमा में आचार्य पद मिला। इन्होंने 33 ग्रंथों की रचना की।

हाटपिपल्या में ऐलक सूर्यसागर जी के साथ ब्रह्मचारी सुवालाल जी को क्षुल्लक दीक्षा दी। नाम रखा 'क्षुल्लक श्री ज्ञानसागर जी'।

मुनिद्वय एवं क्षुल्लक जी विहार करते हुए होशांगाबाद (नर्मदापुरम्), भेलसा होते हुए भोपाल आये। भव्य स्वागत हुआ, पहले दिगम्बर मुनियों का शहर में प्रवेश वर्जित था। मुनि श्री के आगमन पर भोपाल रियासत की बेगम ने दिगम्बर

मुनि प्रवेश निषेध आज्ञा को रद्द करवा दिया। अब मुनियों का निष्कण्टक विहार होने लगा। भोपाल में राजा ने अनाज का रेट एक रुपया में 5 सेर निश्चित कर रखा था, लोग परेशान थे, राजा के पास जाकर प्रजा ने बहुत जोर लगाया, पर राजा पर कोई असर नही हुआ, पर मुनि श्री के आगमन पर राजा ने उसे एक रुपया में 8 सेर कर दिया। यहाँ पर बड़वानी से आकर मुनि श्री आनंद सागर भी मिल गये। भोपाल में पाँच दिन का प्रवास रहा। मुनि शांतिसागर जी से क्षुल्लक ज्ञानसागर जी ने पहले ऐलक दीक्षा ली फिर मुनि दीक्षा भी ली।

एक दिन एक कसाई गाय को मारने के लिए ले जा रहा था, वह गाय बंधन तोड़कर महाराज के पास आई, महाराज जी ने कसाई को रुपये दिलवाकर गाय को बचा लिया। वहाँ से विहार करते हुए कालापीपल आये। वहाँ दो दिन रुके वहाँ से शुजालपुर आये, यहाँ पर एक पाठशाला की स्थापना कराई, वहाँ से राघोगढ़ होते हुए अतिशय क्षेत्र बजरंगगढ़ पधारे, थूवन से चन्देरी आये।

चन्देरी में लोगों ने बटने तोड़कर फेंक दीं:- चन्देरी में जन सैलाब उमड़

पड़ा, प्रवचन हुए। शिवपुरी के वैद्य पं. भैया लाल लिखते हैं ''प्रवचन में मुनि श्री ने लोगों से पूंछा ये जो आपके कुर्ते और शर्ट में बटन लगे हैं वो किस चीज से बनते हैं? लोग नहीं बता पाये तब मुनि श्री ने कहा ये बटन सीप से बनते हैं। सीप जीव की हड्डी है। उसे छूना भी नहीं चाहिए। सभी लोगों ने वहीं पर बटन तोड़कर फेंक दिये। इसके बाद कहा कि जो आप लोग कैप पहने हो, इसमें नवजात मेंमने का चमड़ा होता है, तो फिर आप अहिंसक कैसे कहला सकते हैं? सभी ने तुरंत टोपियों को उतार कर फेंक दिया।

चन्देरी में प्रभावना करके मुंगावली पधारे, यहाँ भी बहुत प्रभावना हुई, यहाँ पाँच दिन रहे, मुंगावली में एक दिन चालीस-पचास गाय बैल श्री शांतिसागर जी के पास आये और उनकी प्रदक्षिणा देकर नमस्कार कर चले गये। यह देखकर सबको आश्चर्य हुआ। मुंगावली से बमोरा आये, यहाँ दो दिन तक धर्म वर्षा हुई। यहां एक बकरा अपने मालिक मुसलमान को छोड़कर अपनी रक्षा के लिए मुनि श्री के समक्ष आ गया। मुनिश्री की कृपा से वह बच गया। यहाँ से बीना

की तरफ विहार किया।

बीना में अंग्रेजों ने भी वंदन कियाः- बीना में अभूतपूर्व श्रद्धा थी, यहाँ आपका केशलोंच हुआ। उस समय 15 हजार के लगभग लोग आये। पं. रमेश चन्द शास्त्री बामौरकला लिखते हैं कि ''बीना में ट्रेन रुकवाकर बड़ी संख्या में अंग्रेज आये। मुनि श्री की तपस्या देखकर दंग रह गये, मुनि श्री ने शराब और मांसाहार त्याग का उपदेश दिया। उन लोगों ने शराब आदि का जीवन भर के लिए त्याग कर दिया। समाज ने केशलोंच में पधारे जैनाजैन लोगों के भोजन की व्यवस्था की एवं साथ में बैलगाड़ी से पधारे लोगों के बैलों का चारा भी उपलब्ध कराया।'' बीना से खुरई, मालथौन मड़ावरा महरौनी होते हुए पपौरा जी आये। यहाँ टीकमगढ़, ललितपुर से देवगढ़ पधारे, देवगढ़ पर्वत पर एक आदिनाथ भगवान की प्रतिमा अवहेलित थी, मुनिश्री ने मूर्ति को उचित स्थान पर विराजमान करने को बोला, जब लोग प्रतिमा को उठाने लगे तब प्रतिमा को अनेक लोग मिलकर भी नहीं उठा पाये। लोगों ने मुनिश्री से प्रार्थना की

आप हाथ लगायें, मुनिश्री ने हाथ लगाया। प्रतिमा तुरंत उठ गई। यह चमत्कार देख लोगों में श्रद्धा भक्ति उमड़ गई।

ललितपुर चातुर्मासः- ललितपुर में आकर 1925 का चातुर्मास क्षेत्रपाल मन्दिर में किया। यहाँ अच्छी प्रभावना हुई। यहाँ एक पाठशाला प्रारम्भ कराई। यहाँ समाज ने उसका नाम 'आचार्य श्री शांतिसागर छाणी पाठशाला' रखा। यहाँ एक कन्या स्कूल भी खुलवाया था, चातुर्मास के बाद कुण्डलपुर, नैनागिर, द्रोणागिर, बरूआसागर, झाँसी होते हुए सोनागिर आये। यहाँ ग्वालियर लश्कर आये यहाँ एक पाठशाला प्रारम्भ कराई। वहाँ से भिंड, इटावा होते हुए कानपुर नगर के फूलबाग में ठहरे, वहाँ मुनीन्द्रसागर जी ने मुनि दीक्षा ली। कानपुर से बाराबंकी आये, यहाँ ब्र. शीतलप्रसाद जी आये मुनिश्री एवं ब्र. जी के प्रवचन होते थे। वहाँ से अयोध्या आये वहाँ से दर्शन कर गोरखपुर को विहार किया।

मछुआरों ने जाल तोड़कर फेंक दियेः- मार्ग में जाते समय नदी के किनारे धीवरों ने हजारों मछलियाँ पकड़कर निकाल रखीं थीं, वे तड़फ रहीं थीं, मुनि

श्री ने धीमरों को अहिंसा का उपदेश दिया, सबने मछली न मारने की प्रतिज्ञा की और पकड़ी हुई मछलियों को नदी में छोड़ दिया यहाँ तक कि अपने जालों को भी तोड़कर नदी में फेंक दिया।

गोरखपुर में सेठ अभिनंदन जी ने एक मन्दिर निर्माण कराके **पंचकल्याणक प्रतिष्ठा मुनि श्री के सान्निध्य में करायी**, अनेक विद्वान आये मुनिश्री के साथ विद्वानों के प्रवचन होते थे। दीक्षा कल्याणक के दिन दीक्षायें हुईं। वहाँ से विहार किया रास्ते में विहार के समय किसी ने अफवाह फैला दी कि मुनिराज को किसी ने मारकर फेंक दिया है।

गाजीपुर गया के बीच एक मुसलमानों का गाँव पड़ा, वहाँ गाँव के एक मुसलमान के बगीचे में महाराज जी को ठहराया, वहाँ एक बारात आई थी, मुनिराज का ठहरना उन्हें अच्छा नहीं लगा, उन्होंने संघ को मारने की योजना बनाई। एक ब्रह्मचारी जी को इसकी भनक लग गई, जगह छोड़ने की बात कही पर मुनिश्री ने कहा दिगम्बर जैन साधु रात्रि में विहार नहीं करते चाहे प्राण क्यों

न चले जायें, संघ के सभी साधुओं से बोल दिया उपसर्ग कितना भी आये सब सहन करना है। मुनि श्री के तप, संयम, त्याग के प्रभाव से मारने आये लोगों के भाव बदल गये। उपसर्ग नहीं कर पाये। वहां से विहार करते हुए, गया नगर आये, यहाँ समाज में बहुत विसंवाद था, सब लोगों को समझाया, वहाँ पंचकल्याणक होने थे।

सम्मेद शिखर की यात्रा सन् 1926:- गया नगर होते हुए सम्मेदशिखर जी को विहार किया, बीसपंथी कोठी के मैनेजर और हजारीबाग के श्रावक मुनि श्री की अगवानी हेतु बहुत लोगों के साथ हाथी लाये मुनि श्री शांतिसागर जी ने कहा हाथी क्यों लाये हो? इसकी क्या जरूरत है हिंसा होती है। मैनेजर ने कहा हमारे यहाँ सैकड़ों वर्षों बाद कोई मुनिराज पधारे हैं। इसलिए भीड़ और हाथी लाये हैं। तत्पश्चात् सम्मेदशिखर पहाड़ पर चढ़े, रात को जलमन्दिर में विश्राम करने हेतु रुके, वहाँ श्वेताम्बरों ने उपसर्ग किया। तप त्याग के प्रभाव से वह दूर हो गया।

गिरिडीह चातुर्मासः- ईस्वी सन् 1926 का चातुर्मास गिरिडीह में किया। साथ में मुनीन्द्र सागर भी थे। वीरसागर जी महाराज कोडरमा चले गये।

यहाँ अनेक विद्वान आये, उन्होंने अनेक ग्रंथों का स्वाध्याय कराया। पं. शिवजी राम पाठक रांची, पं. जयदेव जी, पं. झम्मनलाल जी भगत जी उस समय के ख्याति लब्ध विद्वान थे।

यहाँ के कालूराम मोदी ने मुनिश्री से प्रभावित होकर जैन धर्म स्वीकार किया। यहाँ पर संघ बड़ा हो गया था। तब संघ और समाज ने मिलकर सन् 1926 में **मुनि श्री शांतिसागर जी को आचार्य पद दिया।** वहाँ से विहार कर सम्मेदशिखर गये, वहां से देवघर, चम्पापुर, गुणावा, पावापुर, राजगृह होकर गया नगर आये। गया नगर में बड़ा उत्साह था, क्योंकि यहां पंचकल्याणक महोत्सव होना था। पिछले प्रवास में आचार्य श्री ने समाज में एकता कराई थी। फल्गु नदी की रेत में पांडाल लगाया गया, इस पंचकल्याणक में लगभग 10-12 हजार लोग आये। 90 हजार का चंदा हुआ।

गया से चलकर वाराणसी आये। भदैनी, भेलूपुर सारनाथ, चंद्रपुरी के दर्शन करके इलाहाबाद में आर्यसमाजी लोगों को तर्क से संतुष्ट किया। बांदा, रानीपुर, झाँसी, शिवपुरी, गुना, उज्जैन, मक्सी, रतलाम से बांसवाड़ा आये।

परतापुर चातुर्मासः- 1927 का चातुर्मास परतापुर में सम्पन्न हुआ, ग्राम के अधिकांश लोगों ने मद्य, मांस का त्याग कर दिया। जैन युवाओं ने अभक्ष्य पदार्थ, रात्रि भोजन त्याग एवं देवदर्शन का नियम लिया।

1928 ईडर (गुजरात) में चातुर्मास किया। आचार्य श्री हिन्दी के अलावा गुजराती भी जानते थे, अतः इनके प्रवचन गुजराती में ही होते थे। चातुर्मास के मध्य यहाँ के समाज ने 'आचार्य श्री शांतिसागर छाणी दिगम्बर जैन ग्रंथमाला' नाम से एक संस्था स्थापित की।

1929 में सागवाड़ा चातुर्मास हुआ। यहाँ, बाल विवाह, कन्या विक्रय, मृत्युभोज, छाती पीटने की परम्परा को जड़ से खत्म करवा दिया।

1930 का चातुर्मास इन्दौर नगर में हुआ, यहाँ सर सेठ हुकुमचन्द जी प्रवचन

में आते थे। अपार भीड़ होती थी।

1931 का चातुर्मास ईडर नगर में हुआ, यहाँ 'आचार्य श्री शांतिसागर आत्मोन्नति भवन' का उद्घाटन हुआ।

1932 का चातुर्मास नसीराबाद में हुआ, बहुत वर्षों के पश्चात् आचार्य श्री ने बागड़ प्रांत से विहार किया। इस समय तक अजमेर जयपुर के क्षेत्र में मुनियों का विहार निर्बाध होने लगा था।

ब्यावर नगर का ऐतिहासिक चातुर्मासः- 1933 का चातुर्मास ब्यावर में हुआ, यह एक ऐतिहासिक एवं आपसी वात्सल्य का जीता जागता चातुर्मास था। क्योंकि चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी (दक्षिण) यहाँ पहले से विराजमान थे। सेठ चम्पालाल रामस्वरूप रानीवालों के अथक श्रम से दोनों आचार्यों का चातुर्मास एक ही स्थान पर हुआ। दोनों आचार्यों का मिलन जैन समाज के इतिहास में अनोखी घटना थी। ब्यावर चातुर्मास का एक फोटो अनेक मन्दिरों में मिलता है, जिसमें दोनो आचार्य आजू-बाजू में बैठे हैं, समान आसन पर। महापुरुषों

में छोटी मानसिकता नहीं होती, तेरे मेरे की भावना, छोटे-बड़े की भावना उस समय नहीं थी। प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर जी छाणी महाराज, चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज को बड़े होने के नाते छाणी महाराज योग्य नमोस्तु करते थे। बड़े होने के कारण चारित्र चक्रवर्ती जी छाणी महाराज को समान आसन देते थे, अपने संघ जैसे ही इनका आदर सम्मान होता था। संघ के साधु छाणी महाराज का उतना ही आदर करते थे, जितना अपने गुरु का। दोनों संघ अलग-अलग नहीं लगते थे। पंथ भेद, संघ भेद दूर दूर तक दिखता नहीं था। चातुर्मास की समाप्ति के पश्चात् तारंगा की तरफ विहार हुआ, अनेक नगरों में प्रभावना करते हुए तारंगा जी पहुंचे।

तारंगा जी में पंचकल्याणकः- तारंगा जी में आचार्य श्री के सान्निध्य में ऐतिहासिक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई।

उस समय चारित्र चक्रवर्ती महाराज के शिष्य मुनि श्री कुन्थुसागर जी बागड़ प्रांत में अलग विहार करके प्रभावना कर रहे थे। प्रशममूर्ति छाणी महाराज ने

तारंगा पंचकल्याणक के अवसर पर मुनि श्री कुन्थुसागर जी को आचार्य पद दिया, क्योंकि कुन्थुसागर बड़े विद्वान थे। बहुत समय दोनों आचार्य साथ रहे।

केसरिया जी चातुर्मासः- सन् 1941 और 1942 के दो चातुर्मास ऋषभदेव केसरिया जी में हुए, प्रशम मूर्ति छाणी महाराज के साथ वयोवृद्ध मुनि श्री वीर सागर जी महाराज एवं ऐलक धर्मसागर जी एवं दो ब्रह्मचारी जी थे। केसरिया जी निवासी विद्वान पं. महेन्द्र कुमार 'महेश' लिखते है कि 'मैंने सिद्धांत प्रश्नोत्तरमाला नामक पुस्तक का संपादन व संशोधन किया तथा महाराज जी द्वारा संकलित पुस्तकों का सम्पादन किया, महाराज के पास राज्याधिकारी एवं देव स्थान हाकिम आदि दर्शन करने आया करते थे, महाराज का दिव्य तेज व तपश्चर्या से प्रभावित होते थे।'

यहाँ पर नरसिंपुरा समाज में दो पार्टियाँ थी, महाराज जी ने एकता करवाने का बहुत प्रयास किया, पर एकता नहीं हो पायी, तब दोनों पक्षों के कुछ युवाओं को मिलाकर 'शांति दिगम्बर जैन सेवा संघ' नाम से नई संस्था का गठन किया।

इसके द्वारा समाज में सामाजिक व धार्मिक अनेक कार्य होने लगे।

इस संस्था ने एक वाचनालय व पुस्तकालय खोला उसका नाम 'श्री शांतिकुन्थु वाचनालय' रखा। क्योंकि विद्वान मुनि कुन्थुसागर जी का यहां आगमन हुआ था।

यहीं पर सन् 1942 का चातुर्मास हुआ जिसमें 'आचार्य शांतिसागर दिगम्बर जैन बोर्डिंग' नाम से छात्रावास खोला गया। यहाँ पर आचार्य शांतिसागर जी के नाम से कन्या पाठशाला पहले से चलती थी।

सलुम्बर चातुर्मासः- सन् 1943 का अंतिम चातुर्मास सलुम्बर में हुआ। अब आचार्य श्री का पूरा उपयोग तप और ध्यान में रहता था। बागड़ जैन समाज की मशीन में शताब्दियों से लगे जंग को हटाकर चमकदार तरोताजा कर दिया। हजारों लोगों ने अनेक अभक्ष्य पदार्थ, हिंसक चीजों का एवं रूढ़ीगत पाखंडों का त्याग किया, स्वाध्याय, दान, पूजा, पाठ, अभिषेक आदि में लोगों को सक्रिय किया।

ई. सन् 1943 का सलुम्बर में चातुर्मास करके कुहाला गाँव में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के पश्चात् 12 मई को सागवाड़ा पधारे।

सागवाड़ा में अंतिम दर्शनः- सागवाड़ा आते समय रास्ते में बुखार आ गया। 13 मई को महाराज ने अल्प आहार लिया धीरे-धीरे ज्वर बढ़ता गया। आहार पानी का त्याग कर दिया। 17 मई, सन् 1944 को आपकी स्थिति और बिगड़ गई और साथ में डबल निमोनिया ने आपको और भी अधिक जकड़ लिया। आप शरीर आदि बाह्य वस्तुओं की तरफ से उपयोग हटाकर पंचनमस्कार मंत्र का सतत् ध्यान करते रहे, भेद विज्ञान की छेनी से विभावों का नाश करते हुए, आत्मा में लीन होते हुए अंतिम श्वास ली। चेतन पंछी निकलकर उड़ गया, तन पिंज्जर पड़ा रह गया। अल्पवय में सबको उदास छोड़ कर चले गये। वैसे तो संल्लेखनापूर्वक समाधि इस जीवन की सबसे बड़ी सार्थकता होती है, पर मोही शिष्य तो वियोग मानकर शोक करने लगते हैं।

उस समय मुनि श्री नेमीसागर जी, ब्र. नानालाल जी आदि सागवाड़ा के

हजारों नर-नारी, और अजैन लोग भी बड़ी संख्या में उपस्थित थे। सभी को बहुत बड़ा झटका लगा बागड़ का संत चला गया।

चंदन की लकड़ी के विमान में पद्मासन बैठाकर बड़ा लम्बा जुलूस निकला, मुख्य बाजार होता हुआ नसियाँ जी जुलूस आया। यहाँ पर शास्त्रोक्त विधि से दाह संस्कार हुआ। संस्कार घी, गोला, चंदन की लकड़ी से किया गया।

यह समाचार पूरे भारत में आँधी की तरह फैल गया, जगह-जगह शोक सभायें हुईं कई स्थानों पर बाजार बंद रहे व जुलूस निकाले गये। पत्र-पत्रिकाओं में समाधि के विस्तार से समाचार प्रकाशित हुए।

प्रशममूर्ति आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज (छाणी) चातुर्मासों की सूची।

1. 1924 इन्दौर, 2. 1925 ललितपुर, 3. 1926 गिरिडीह (आचार्य पद), 4. 1927 परतापुर, 5. 1928 ईडर, 6. 1929 सागवड़ा, 7. 1930 इन्दौर,

8. 1931 ईडर, 9. 1932 नसीराबाद, 10. 1933 ब्यावर, 11. 1934 सागवाड़ा, 12. 1935 उदयपुर, 13. 1936 ईडर, 14. 1937 गलियाकोट, 15. 1938 पारसोला, 16. 1939 भिण्डर, 17. 1940 तालोद, 18. 1941 ऋषभदेव केसरिया, 19. 1942 ऋषभदेव केसरिया, 20. 1943 सलुम्बर। इस तरह से अपने दीक्षा काल में 20 चातुर्मास किये थे।

भारतवर्ष की तीनों परम्पराओं के आचार्यों का बिंदुबार विवरण तालिका के माध्यम से दिया गया है।

आचार्य का नाम	जन्म	क्षुल्लक/दीक्षा	मुनि/दीक्षा	आचार्य/पद	समाधि/प्राप्ति
मुनि कुंजर आचार्य श्री 108 आदिसागरजी (अंकलीकर)	1866	—	1913	—	1944
चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री 108 शांति सागरजी (दक्षिण)	1872	1915	1920	1924	1955
प्रशम मूर्ति आचार्य श्री 108 शांतिसागरजी (छाणी)	1888	1922	1923	1926	1944

आचार्य श्री शांति सागर जी छाणी वाले कठोरचर्या के धनी थे, उन्होंने साधुओं में कुछ चीजें ऐसी देखीं जो ठीक नहीं थीं, तब उन्होंने संघ के साधुओं की निर्दोषचर्या पालन हो इस हेतु कुछ नियम बनाये।

1. केशलोंच खुले मंच से ना करके एकांत में करना। (पहले वे भी करते थे पर बाद में अनुभव हुआ ये ठीक नहीं है)
2. केशलोंच सम्बन्धी या पिच्छी कमण्डलु शास्त्र भेंट की बोली नहीं लगवाना।
3. किसी संस्था के लिए चंदा नहीं करना, न कहीं चंदा भिजवाना। दान का उपदेश करें और कोई दान देना चाहता है तो वहीं की संस्था में विद्यासंस्थानों, जिनवाणी सेवा में या अन्य चीजों में दान दें।
4. अपने पास सवैतनिक नौकर नहीं रखना।
5. कोई चंदा करने वाले मुनि, ऐलक, क्षुल्लक को साथ नहीं रखना। यदि कोई ऐसा करता है तो उसे संघ से पृथक कर देना।

6. पात्र परीक्षापूर्वक ही दीक्षा देना या व्रत नियम देना।
7. अपने साथ चटाई आदि न रखना और न ही चटाई पर सोना, बैठना।
8. जिसके घर में आहार हो उनसे किसी प्रकार के दान का नहीं बोलना। यथा सम्भव मेले आदि में जहां नर-नारियां अधिक हों, या भीड़-भाड़ अधिक हो वहाँ जाने से परहेज करें। विशेष परिस्थितियों को छोड़कर। ये नियम सूचित करते हैं उस समय कुछ ऐसी चीजें आ गई होगी, इसलिए ये नियम बनाये। क्या ये नियम आज भी प्रासंगिक हैं?

प्रशममूर्ति आचार्य श्री 108 शांतिसागर जी (छाणी) महाराज के शिष्य :-आचार्य श्री सूर्यसागर जी, मुनि श्री ज्ञानसागर जी, मुनि श्री आदिसागर जी, मुनि श्री नेमीसागर जी, मुनि श्री वीरसागर जी, क्षुल्लक श्री धर्मसागर जी उनके द्वारा दीक्षित शिष्य थे।

प्रशममूर्ति आचार्य श्री 108 शांतिसागर जी महाराज (छाणी) के द्वारा लिखित एवं संकलित ग्रंथों की सूचीः-

1. मूलाराधना (अनेक टीकाओं सहित) शास्त्राकार पृष्ठ 1120 सोलापुर सन् 1935
2. श्री शांतिसागर सिद्धांत प्रश्नोत्तरमाला
3. शांतिवयाशतकम्, उदयपुर वीर नि.सं. 2463
4. आगमदर्पण
5. शांतिसुधासागर

शांतिविलास नामक पुस्तक का संग्रह किया जिसमें शिक्षाप्रद 1000 दोहे एवं 1000 सवैये संग्रह किये थे। पं. महेन्द्र कुमार 'महेश' ने इनके संग्रह का संपादन किया था।

* * *

प्रथम पट्टाचार्य श्री 108 सूर्यसागर जी महाराज का परिचय

ये आचार्य शांतिसागर जी के प्रथम पट्ट शिष्य थे। पिता श्री हीरालाल जी, माता गेंदाबाई के पुत्र का जन्म कार्तिक शुक्ल नवमी वि.सं. 1940, ई. सन् 1883 में हुआ, नाम था हजारीमल जी पोरवाल जाति के यशलाहा परिवार, ग्राम प्रेमसर, जिला-ग्वालियर के निवासी थे। श्री हीरालाल जी के भाई बलदेव के कोई संतान न होने से ये उनके दत्तक पुत्र हो गये और उनके साथ झालरापाटन आ गये, इनकी प्रारम्भिक शिक्षा झालरापाटन में हुई। शिवपुरी जिले के मेवड़ा ग्राम के ओमकारमल पोरवाल की सुपुत्री के साथ मोताबाई आपका विवाह हो गया। आप इन्दौर आकर सरसेठ हुकुमचन्द जी के यहाँ बाद, में सेठ कल्याणमल जी के यहां सेवारत थे। बाद में सेवा कार्य को छोड़कर इन्दौर में ही कपड़े की दलाली का कार्य करने लगे, आसोज शुक्ला 6 सन् 2924 में इन्दौर चातुर्मास में ऐलक दीक्षा हुई, नाम रखा गया **'ऐलक सूर्यसागर जी'** और मार्गशीर्ष बदि 11 वि.

सं. 1981 ई. सन् 1924 में 41 वर्ष की आयु में मुनि दीक्षा हाटपीपल्या ली थी नाम था, **'मुनिश्री सूर्यसागर जी'** महाराज। कोडरमा में कार्तिक शुक्ला 9 ई. सन् 1928 में आचार्य पद से विभूषित हुए।

आचार्य सूर्यसागर जी ज्ञानी, ध्यानी कठोरचर्या के धारक आध्यात्मिक संत थे। 14 जुलाई 1952 में डालमियाँ नगर में 69 वर्ष की आयु में समाधि हुई।

इनके दीक्षित शिष्यः- आचार्य विजयसागर जी, मुनि श्री आनन्दसागर जी, मुनिश्री पद्मसागर जी, क्षुल्लक पूर्णसागर जी, क्षुल्लक चिदानन्द जी थे।

साहित्य रचनाः- आचार्य श्री ने 33 ग्रंथों की रचना की जिसमें सबसे महत्वपूर्ण संकलित ग्रंथ संयमप्रकाश जो कि 10 भागों में प्रकाशित है, जिसमें मुनियों के आचार एवं श्रावकों के आचार का विस्तार से वर्णन है। आचार्य श्री के समय में संयमप्रकाश ग्रंथ की बड़ी ख्याति थी। इनकी अन्य रचनाएँ स्वभाव बोध मार्तण्ड, विवेक मार्तण्ड, आध्यात्मिक ग्रंथसंग्रह, अभक्ष्य विचार मार्तण्ड आदि हैं।

आचार्य सूर्यसागर जी की एक और विशेषता रही है। जहाँ-जहाँ जाते थे, वहां यदि समाज में झगड़े चल रहे हों, विवादों से पूरा समाज छिन्न-भिन्न हो रहा हो, अच्छे कार्य नहीं हो पा रहे हों, उन विवादों को हमेशा के लिए खत्म करवा देते थे। उस समय सैकड़ों नगरों ग्रामों के उलझे हुए हठग्राही लोगों के विसंवादों को क्षण में सुलझा दिया करते थे।

* * *

द्वितीय पट्टाचार्य श्री 108 विजयसागर जी महाराज का परिचय

जन्म - सिरोली, जिला-ग्वालियर (म.प्र.) सन्- 26 जनवरी 1882, जन्म नाम - श्री चोखेलाल जैन, माता-पिता - श्री मति लक्ष्मीबाई एवं श्री मानिकचन्द जैन, क्षुल्लक दीक्षा - इटावा, ऐलक दीक्षा - मथुरा, मुनि दीक्षा - सन् 1943 मारोठ

में आचार्य सूर्यसागर जी के द्वारा, आचार्य पद - लश्कर ग्वालियर, समाधिमरण-पौष वदी नवमी सन् 20.12.1962, अतिशय - एक जगह गाँव वालों ने कहा महाराज जी इस कुएँ का पानी खारा है, आचार्य श्री ने कमण्डलु का पानी कुएँ में डाला और कहा, इसका पानी कहाँ खारा है? मीठा ही है, आप लोग पीकर देखो, लोगों ने पानी पिया, सच में मीठा हो गया था। इनके साधनाकाल में अनेक अतिशय हुए, आपको वचन सिद्धि थी, जो बोल देते वही हो जाता था।

* * *

तृतीय पट्टाचार्य श्री 108 विमल सागर जी महाराज (भिंड वाले) का परिचय

आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज विश्ववंद्य सच्चे साधकों में से एक थे। इनका जन्म मध्य प्रदेश के ग्राम-मोहना, जिला-भिंड में पौष शुक्ला द्वितीया सन् 1891

में पिता जैसवाल कुलरत्न सेठ भीकमचन्द जी, माता मथुरादेवी के आँगन में हुआ था, नाम था किशोरी लाल। आठ वर्ष की उम्र में पिता का देहावसान हो गया।

इनके दो विवाह हुए थे प्रथम धर्मपत्नी का सात वर्ष साथ रहा। दूसरी धर्मपत्नी का 15 वर्ष साथ रहा। इसके पश्चात् धर्म ध्यान की तरफ इनकी लगन बढ़ गई और सं. 1993 में व्रत प्रतिमा धारण कर ली।

वि.सं.1997 ई. सन् 1941 में आचार्य श्री विजयसागर जी महाराज से झालरापाटन में क्षुल्लक दीक्षा लेकर तप में लीन रहने लगे। फिर कापरेन में आचार्य विजयसागर जी महाराज से ऐलक दीक्षा ली।

आचार्य श्री विजयसागर जी के कर कमलों के द्वारा कोटा नगर में सन् 1943 में मुनि दीक्षा धारण की।

आपकी प्रेरणा से अनेक ग्रंथ प्रकाशित हुए, केवल गुना में ही 12 आचार्य प्रणीत ग्रंथों का प्रकाशन कराया। मुनि अवस्था में 31 चातुर्मास किये।

सांगोद जिला कोटा में सन् 1973 को आचार्य पद प्राप्त हुआ। 13 अप्रैल सन् 1973 को सायं 6 बजे यम संल्लेखना धारण कर ली और रात्रि 9:44 बजे आपने अंतिम श्वास ली।

* * *

मासोपवासी, समाधि सम्राट चतुर्थ पट्टाचार्य श्री 108 सुमतिसागर जी महाराज का परिचय

आपका जन्म ग्राम-श्यामपुरा, जिला-मुरैना में आसोज शुक्ल चौथ ई. सन् 1917 में पिता श्री छिद्दूलाल जी जैसवाल, माँ चिरोंजादेवी के घर हुआ था। आपका नाम नत्थीलाल रखा गया। आपके तीन भाई थे, झुन्नीलाल जी, बाबूलाल जी एवं रामस्वरूप जी।

12 वर्ष की अवस्था में शादी हुई थी, धर्मपत्नी रामश्रीदेवी थी। आपके दो पुत्र - बारेलाल जी, भागचन्द जी, दो पुत्रियाँ- कपूरीबाई, शकुन्तलाबाई। इनके जीवन में कई अनोखी घटनायें हुईं, एक बार डाकुओं ने अपहरण किया, अम्बाह में डाकुओं से बचे, विषैले प्राणी ने काटा पर पुण्य योग से उनकी रक्षा हुई।

वि. संवत् 2021 में व्रतप्रतिमा अंगीकार की, मुरैना में पंचकल्याणक के शुभ अवसर पर आचार्य विमलसागर जी महाराज से सातप्रतिमा के व्रत ग्रहण किये। रेवाड़ी हरियाणा में आचार्य विमलसागर जी से चैत्र शुक्ल 13 सं. 2025 सन् 1968 भगवान श्री महावीर स्वामी के जन्मकल्याणक के दिन ऐलक दीक्षा लेकर मोक्ष पथ पर अग्रसर हुए। अगहन कृष्ण 12 सं. 2025 ई. सन् 1968 में गाजियाबाद नगर में मुनिदीक्षा धारण की नाम पाया ''मुनि श्री सुमतिसागर जी महाराज''। 13 अप्रैल सन् 1973 में नगर मुरैना में आचार्य पद से अलंकृत हुए। आप बहुत तपस्वी थे, भाद्रमाह में एक माह का उपवास करते थे, आपने सोनागिर एवं सम्मेदशिखर में त्यागी व्रतियों के लिए आश्रम बनवाये थे जिसमें वृद्ध साधु-संतों कि समुचित व्यवस्थाएँ रहती हैं। अनेक ग्रंथों का प्रकाशन कराया।

आपके संघ की आर्यिका ज्ञानमति माता जी 'गुजरात वाली', ये माता जी विदुषी आर्यिका थी, संघ की व्यवस्था बनाने में बहुत चतुर थी। इनके शिष्य आचार्य कल्प श्री विद्याभूषण सन्मतिसागर जी को सूरज बोलते थे, उपाध्याय ज्ञानसागर जी को चंदा कहते थे, इनके एक शिष्य आचार्य भरतसागर जी महाराज ने गुजरात में प्रभावना की एवं धार नगरी में आचार्य श्री मानतुंग जी के स्मरणार्थ मानतुंग गिरी का निर्माण कराया। भरतसागर जी के शिष्य आचार्य शिवसागर जी ने डोला पिड़ावा में भूगर्भ से प्राप्त प्रतिमा के स्थान पर मन्दिर एवं धर्मशाला, संतनिवास आदि का निर्माण कराकर क्षेत्र बनाया है। अभी यहाँ का अधूरा कार्य गणिनी आर्यिका श्री स्वस्तिभूषण माता जी के आशीष एवं निर्देशन में स्वस्तिधाम समिति की तरफ से हो रहा है। इस क्षेत्र को स्वस्तिधाम कमेटी ने गोद ले लिया है।

वे 75 वर्ष की उम्र में 40-45 किलोमीटर तक विहार करते थे। आहार में सीमित वस्तुयें लेते थे। आपने सोनागिर क्षेत्र को बचाने के लिए बड़ा संघर्ष किया। वे विरोधियों के बीच दीवार की तरह अड़िग खड़े हो जाते थे, इसलिए सोनागिर सिद्धक्षेत्र अतिक्रमण से बच गया। इनके प्रवचन साधारण थे। पर

प्रभावशाली थे, इन्हें संल्लेखना पूर्वक समाधि कराने का बड़ा अभ्यास था, छपक को कब क्या त्याग कराना है एवं शास्त्रोक्त लक्षणों से कितने दिन में समाधि होगी सब बता देते थे।

क्वांर (अश्विन) बदी 13 सं. 2051 ई. सन् 3 अक्टूबर 1994 प्रातः 9 बजे के लगभग उत्तम समाधि पूर्वक अंतिम श्वास ली।

* * *

पंचम पट्टाचार्य श्री 108 विद्याभूषण सन्मतिसागर जी महाराज का परिचय

चम्बल की बीहडों के मध्य छोटा-सा ग्राम बरबई, जिला मुरैना में पिता श्री बाबूलाल जैसवाल जैन, माता श्री सरोजदेवी की कोख से सन् 10 नवम्बर 1949 को एक

बालक का जन्म हुआ, नाम था सुरेश कुमार। ये बचपन में बहुत नटखट थे। खतरों के खिलाड़ी थे। बहुत धमाल मचाते थे, पर बाद में संसार असार जानकर घर से सुख की खोज में निकल गये और आचार्य श्री सुमतिसागर जी के निकट आकर व्रत लिए। सम्मेदशिखर में आचार्य सुमतिसागर जी से सन् 17 फरवरी 1972 क्षुल्लक दीक्षा ली। नाम था क्षुल्लक सन्मतिसागर जी महाराज, आपने सिद्धांत, साहित्य, गणित, न्याय दर्शन, ज्योतिष आदि का गहन अध्ययन किया। आचार्य श्री विमलसागर जी के पास भी रहे। धर्म प्रभावना के लिए स्याद्वाद शिक्षण परिषद् की स्थापना की, परिषद् के माध्यम से धार्मिक शिक्षण शिविरों का आयोजन प्रारम्भ कराया। आपके द्वारा लिखित अनेक पुस्तकें प्रकाशित हुई, अनेक विधानों की रचना की। 'विमल भक्ति संग्रह' के संकलन में बहुत बड़ा योगदान था।

आचार्य श्री सुमतिसागर जी महाराज ने 31 मार्च 1988 महावीर जयंती के दिन मुनि दीक्षा प्रदान की।

10 अप्रैल 1989 नरवर (शिवपुरी) में आचार्य श्री सुमतिसागर जी ने आचार्य पद प्रदान किया। अनेक नये क्षेत्रों का निर्माण, शिक्षण संस्थानों का निर्माण कराया। जैसे सागर में मंगलगिरी, सोनागिरी में स्याद्वाद शिक्षण परिषद् के द्वारा स्कूल, छात्रावास, धर्मशाला आदि हैं।

अवहेलित जगह का संघर्ष के पश्चात् समाज को अधिकार दिलाकर शिवपुरी नगर में नया क्षेत्र बनवाया। आज जो छतरी वाला मन्दिर कहलाता है, सूखी सेवनियाँ भोपाल में नया क्षेत्र बनवाया, ललितपुर में स्कूल चल रहा है, लखनादौन में हाईवे पर नया क्षेत्र एवं स्कूल बनवाया। कान्हीवाड़ा में स्कूल, त्रिलोक तीर्थ बड़ागाँव में त्रिलोक मन्दिर, स्कूल, छात्रावास, औषधालय, गौशाला, यात्री निवास, संत निवास आदि।

आप कवि थे, आपने अनेक विधानों की रचना की जिसमें सर्वतोभद्र स्वयंभू विधान आदि 8 दिवसीय, 5 दिवसीय, 1 दिवसीय विधान लिखे। मुक्तिपथ की ओर, स्याद्वाद वाटिका, दशलक्षण धर्म आदि।

आपके द्वारा स्थापित स्याद्वाद युवा क्लब के द्वारा प्रत्येक रविवार विभिन्न मन्दिरों में जाकर सामूहिक अभिषेक पूजन करना एवं धार्मिक, सामाजिक कार्य करना। आपने अनेक जगह पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव कराये। सोनागिर में सिंहरथ चलवाया।

* * *

सराकोद्धारक षष्ठपट्टाचार्य श्री 108 ज्ञानसागर जी महाराज का परिचय

चम्बल नदी घाटी के मध्य मुरैना नगर में इनका जन्म 1 मई 1957 को पिता श्री शांतिलाल जी व माता श्री अशर्फीबाई जैसवाल जाति जैन धर्म में हुआ। इनके दो भाई राकेश जी, प्रदीप जी एवं दो बहनें मीना, अनीता हैं। इनके दादा जी श्री शंकरलाल जी ने भी क्षुल्लक दीक्षा लेकर अपना उपकार किया था। बाल्यावस्था

से ही धार्मिक प्रवृत्ति रही थी, पिच्छी कमण्डलु से प्रेम था, और सदा चित्त में रहता था कि हमें दीक्षा लेना है। उनका सांसारिक कार्यों में मन नहीं लगता था। अनेक बाधाओं को पार करके आचार्य श्री विद्यासागर जी से अजमेर में ब्रह्मचर्य व्रत लिया और क्षुल्लक सन्मतिसागर के पास रहकर धार्मिक अध्ययन किया। सोनागिर क्षेत्र पर आचार्य सुमतिसागर जी से 5 नवम्बर 1976 के शुभ दिन क्षुल्लक दीक्षा ली। नाम हुआ क्षुल्लक श्री गुणसागर जी। दीक्षा के बाद अधिकांश समय मौन रहकर जैनागम का गहन अध्ययन किया, अनेक जैन एवं ब्राह्मण विद्वानों से दर्शन न्याय व्याकरण, सिद्धांत का 12 वर्ष तक गहन अध्ययन किया। इस बीच आचार्य विद्यासागर जी के संघ में रहकर वैयावृत्ति करते हुए अध्ययन किया।

चैत्र सुदी तेरस महावीर जयंती के दिन 31 मार्च 1988 में आचार्य सुमतिसागर जी से मुनि दीक्षा ली। कुछ समय पश्चात् पश्चिमी उत्तर प्रदेश की तरफ विहार किया। यहाँ से प्रभावना का दौर प्रारम्भ हुआ। इस क्षेत्र में जैन अजैन समाज में जन-जन प्रिय बन गये, छोटे विद्यासागर के नाम से विख्यात

हुए। सरधना नगर में आचार्य सुमतिसागर जी ने उपाध्याय पद से अलंकृत किया। इनके जहाँ चरण पड़ जाते, जंगल में मंगल हो जाता था। जैन धर्म की मूलधारा से दूर हो चुके सराक जाति को फिर से मूल जैन धारा से जोड़ा, जैन धर्म के प्रबुद्ध वर्ग को धर्म से जोड़ा, जज, एडवोकेट, सी.ए. इंजीनियर, वैज्ञानिक, शिक्षक, बैंकर्सों आदि के अखिल भारतीय संगठन बनवाये, सम्मेलन कराये।

आचार्य विद्याभूषण सन्मति सागर को आचार्य पद बड़ागाँव में प्राप्त हुआ। ज्ञानतीर्थ, मुरैना, ज्ञानस्थली मेरठ, अहिंसास्थली अलवर, सराक भवन सम्मेदशिखर एवं सराकोत्थान केन्द्र रघुनाथपुर, कालेज हेतु माण्डया, मैसूर, आरोग्य केन्द्र मंडोला उ.प्र., शाहपुर में कालेज, ज्ञानसागर गुरुकुल बरनावा, श्रमण ज्ञान भारती मथुरा आदि का निर्माण कराया। अतिशय क्षेत्र बडागाँव, बरनावा का उद्धार कराया, सोनागिर पर्वत पर नंदीश्वरद्वीप रचना कराई।

आपके आशीर्वाद से आचार्य शांतिसागर छाणी ग्रंथमाला, बुढ़ाना, प्राच्य श्रमण भारती, श्रुत संवर्द्धन संस्थान से लगभग 200 पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं।

जिसमें-षट्खण्डागम (मूल सूत्रार्थ), तिलोय पण्णति तीन भाग, कुन्द कुन्द भारती, समंतभद्रभारती, आराधना कथाकोश, तीर्थंकर महावीर और उनकी आचार्य परम्परा के चार भाग, प्रमेयकमल मार्तण्ड, अनेक पुराने विद्वानों के सम्बन्धित हुए सेमीनारों के आलेखों की पुस्तकें, सामान्य वर्ग के लिए विपुल साहित्य प्रकाशित हुआ है।

* * *

प्रशममूर्ति आचार्य श्री 108 शांतिसागर जी महाराज (छाणी) के शिष्य

आचार्य श्री सूर्यसागर जी
मुनि श्री ज्ञानसागर जी
मुनि श्री नेमीसागर जी
मुनि श्री वीरसागर जी

मुनि श्री आदिसागर जी

क्षुल्लक श्री धर्मसागर जी

* * *

प्रथम पट्टाचार्य श्री 108 सूर्यसागर जी महाराज के शिष्य

आचार्य श्री विजयसागर जी

मुनि श्री आन्नदसागर जी

मुनि श्री पद्मसागर जी

क्षुल्लक श्री पूर्णसागर जी

क्षुल्लक श्री चिदानंद जी

* * *

द्वितीय पट्टाचार्य श्री 108 विजय सागर जी महाराज

* * *

तृतीय पट्टाचार्य श्री 108 विमल सागर जी महाराज (भिंडवालो) के शिष्य

आचार्य श्री निर्मलसागर जी
आचार्य श्री सुमतिसागर जी
आचार्य श्री कुन्थुसागर जी
मुनि श्री अजितसागर जी
ऐलक श्री ज्ञानसागर जी
ऐलक श्री सन्मतिसागर जी
क्षुल्लक श्री धर्मसागर जी

* * *

आचार्य कुन्थुसागर जी 'ग्वालियर' के शिष्य

आचार्य श्री सन्मतिसागर जी 'त्रिमूर्ति शिखरजी वाले'
आचार्य श्री शांतिसागर जी 'पोरसा वाले'

आचार्य श्री चन्द्रसागर जी क्षुल्लक श्री वर्धमानसागर जी

* * *

चतुर्थ पट्टाचार्य श्री 108 सुमति सागर जी महाराज के शिष्य

आचार्य श्री विद्याभूषण सन्मतिसागर जी
आचार्य श्री भरतसागर जी
आचार्य श्री विवेकसागर जी
मुनि श्री संभवसागर जी
मुनि श्री सुपार्श्वसागर जी
मुनि श्री मुक्तिसागर जी
आचार्य श्री ज्ञानसागर जी
आचार्य श्री अजितसागर जी
मुनि श्री विजयसागर जी
मुनि श्री वर्धमानसागर जी
मुनि श्री मल्लिसागर जी
मुनि श्री समाधिसागर जी

मुनि श्री चन्द्रसागर जी
मुनि श्री सन्मतिसागर जी
मुनि श्री बाहुबलीसागर जी
मुनि श्री विनयसागर जी
मुनि श्री क्षमासागर जी
मुनि श्री संतोषसागर जी
मुनि श्री अजितसागर जी
मुनि श्री आदिसागर जी
मुनि श्री नेमीसागर जी
आर्यिका श्री राजमति जी
आर्यिका श्री ज्ञानमति जी
आर्यिका श्री वीरमति जी
आर्यिका श्री चन्द्रमति जी

मुनि श्री शान्तिसागर जी
मुनि श्री ज्ञानभूषण सागर जी
मुनि श्री संभवसागर जी
मुनि श्री समतासागर जी
मुनि श्री गुणसागर जी
मुनि श्री वीरसागर जी
मुनि श्री श्रेयांशसागर जी
मुनि श्री वैराग्यसागर जी
मुनि श्री तपसागर जी
आर्यिका श्री पार्श्वमति जी
आर्यिका श्री विद्यामति जी
आर्यिका श्री सिद्धमति जी
आर्यिका श्री दयामति जी

आर्यिका श्री समाधिमति जी
आर्यिका श्री सूर्यमति जी
आर्यिका श्री वीरमति जी
ऐलक श्री आदिसागर जी
ऐलक श्री शीतलसागर जी
ऐलक श्री ऋषभसागर जी
ऐलक श्री पद्मसागर जी
क्षुल्लक श्री चन्द्रसागर जी
क्षुल्लक श्री नेमसागर जी
क्षुल्लक श्री बुद्धिसागर जी
क्षुल्लक श्री नमिसागर जी
क्षुल्लक श्री शीतलसागर जी
क्षुल्लक श्री शान्तिसागर जी

आर्यिका श्री कीर्तिमति जी
आर्यिका श्री शान्तिमति जी
आर्यिका श्री भाग्यमति जी
ऐलक श्री ऋषभसागर जी
ऐलक श्री जितेन्द्रसागर जी
ऐलक श्री निर्वाणसागर जी
ऐलक श्री शीतलसागर जी
क्षुल्लक श्री सूर्यसागर जी
क्षुल्लक श्री धर्मसागर जी
क्षुल्लक श्री नेमिसागर जी
क्षुल्लक श्री संभवसागर जी
क्षुल्लक श्री वीरसागर जी
क्षुल्लक श्री सूर्यसागर जी

क्षुल्लक श्री विनयसागर जी
क्षुल्लक श्री ऋषभसागर जी
क्षुल्लक श्री चन्द्रसागर जी
क्षुल्लक श्री नेमीसागर जी
क्षुल्लक श्री कैलाशसागर जी
क्षुल्लक श्री अन्नतसागर जी
क्षुल्लक श्री सिद्धसागर जी
क्षुल्लिका श्री शांतिमति जी
क्षुल्लिका श्री आदिमति जी
क्षुल्लिका श्री धर्ममति जी
क्षुल्लिका श्री विपुलमति जी
क्षुल्लक श्री दयासागर जी
क्षुल्लक श्री सिद्धसागर जी
क्षुल्लक श्री भावसागर जी
क्षुल्लक श्री कुलभूषण जी
क्षुल्लक श्री अनंगसागर जी
क्षुल्लक श्री मल्लिसागर जी
क्षुल्लिका श्री ज्ञानमति जी
क्षुल्लिका श्री जिनमति जी
क्षुल्लिका श्री भाग्यमति जी
क्षुल्लिका श्री दयामति जी

* * *

आचार्य श्री 108 सुमतिसागर जी द्वारा दीक्षित
आचार्य श्री 108 अजितसागर जी के शिष्य
आचार्य श्री 108 कल्याणसागर जी उनके शिष्य
आचार्य श्री 108 विनीतसागर जी के शिष्य

मुनि श्री अर्पणसागर जी मुनि श्री अभिनंदनसागर जी

* * *

आचार्य श्री 108 सुमतिसागर जी द्वारा दीक्षित
आचार्य श्री 108 नेमीसागर जी के शिष्य

मुनि श्री संयमसागर जी मुनि श्री भव्यसागर जी

* * *

आचार्य श्री 108 सुमतिसागर जी द्वारा दीक्षित गणिनी आर्यिका श्री 105 ज्ञानमति माता जी (गुजरात) की शिष्या

आर्यिका श्री श्रेष्ठमति जी　　आर्यिका श्री स्वर्णमति जी

उनकी और भी शिष्यायें हो सकती हैं हमें उनके नाम प्राप्त नहीं हो पाये।

* * *

पंचम् पट्टाचार्य श्री 108 विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज के शिष्य

आचार्य श्री त्रिलोकभूषण जी　　आचार्य श्री गुलाबभूषण जी

ऐलाचार्य श्री अतिवीर जी　　मुनि श्री विजयभूषण जी

मुनि श्री आदिभूषण जी
मुनि श्री शिवभूषण जी
मुनि श्री संकल्पभूषण जी
मुनि श्री स्वरभूषण जी
मुनि श्री चन्द्रभूषण जी
आर्यिका श्री लक्ष्मीभूषण जी
आर्यिका श्री दृष्टिभूषण जी
आर्यिका श्री अनुभूतिभूषण जी
आर्यिका श्री विशुद्धिभूषण जी
क्षुल्लक श्री विमलभूषण जी
क्षुल्लक श्री जिनेन्द्रभूषण जी
क्षुल्लक श्री योगभूषण जी
क्षुल्लिका श्री शांति भूषण माताजी

मुनि श्री मेरूभूषण जी
मुनि श्री प्रभावनाभूषण जी
मुनि श्री तत्वभूषण जी
मुनि श्री समताभूषण जी
आर्यिका श्री मुक्तिभूषण माता जी
आर्यिका श्री सरस्वतीभूषण जी
आर्यिका श्री सृष्टिभूषण जी
गणिनी आर्यिका श्री स्वस्तिभूषणजी
आर्यिका श्री शक्तिभूषण जी
क्षुल्लक श्री ध्यानभूषण जी
क्षुल्लक श्री त्यागभूषण जी
क्षुल्लक श्री प्रकाशभूषण जी
क्षुल्लिका श्री पारस भूषण माता जी

क्षुल्लिका श्री भक्ति भूषण माता जी क्षुल्लिका श्री तृप्ति भूषण माता जी
क्षुल्लिका श्री कांति भूषण माता जी क्षुल्लिका श्री समाधि भूषण माता जी

* * *

आचार्य श्री 108 विमलसागर जी महाराज (भिण्डवालों) द्वारा दीक्षित आचार्य श्री 108 निर्मलसागर जी महाराज के शिष्य

आचार्य श्री शांतिसागर जी (हस्तिनापुर वाले)
मुनि श्री सन्मतिसागर जी (अजमेर वाले)
मुनि श्री निर्वाणसागर जी मुनि श्री दर्शनसागर जी (सुसनेर)
मुनि श्री वर्धमानसागर जी मुनि श्री धर्मकीर्ति जी

मुनि श्री जयसागर जी
मुनि श्री कीर्तिसागर जी
मुनि श्री अजितसागर जी
मुनि श्री बुद्धसागर जी
मुनि श्री अकलंकसागर जी
मुनि श्री धैर्यसागर जी
मुनि श्री सुदर्शनसागर जी
मुनि श्री सुवीरसागर जी
मुनि श्री सूर्यसागर जी
मुनि श्री नेमीसागर जी
मुनि श्री अचलसागर जी
मुनि श्री रतनसागर जी
मुनि श्री निर्भयसागर जी

मुनि श्री विजयसागर जी
मुनि श्री चारित्रसागर जी
मुनि श्री महावीरसागर जी
मुनि श्री कुन्दकुन्द सागर जी
मुनि श्री समंतभद्रसागर जी
मुनि श्री नमिसागर जी
मुनि श्री समयसागर जी
मुनि श्री चन्द्रसागर जी
मुनि श्री ध्रुवसागर जी
मुनि श्री ध्यानसागर जी
मुनि श्री वीरभूषण जी
मुनि श्री निर्ममत्वसागर जी
मुनि श्री गिरनारसागर जी

मुनि श्री आदिसागर जी
मुनि श्री धरसेनसागर जी

आर्यिका श्री शांतमति जी
आर्यिका श्री सिद्धमति जी
आर्यिका श्री विनयमति जी
आर्यिका श्री दृढ़मति जी
आर्यिका श्री वीरमति जी (तमिल)
आर्यिका श्री अचलमति जी
आर्यिका श्री निर्लेपमति जी
ऐलक श्री त्यागसागर जी
ऐलक श्री दयासागर जी
क्षुल्लक श्री समन्तभद्रसागर जी

मुनि श्री निर्ग्रंथसागर जी
गणिनी आर्यिका श्री विशुद्धमति जी (एटावाली)

आर्यिका श्री निर्वाणमति जी
आर्यिका श्री वीरमति जी
आर्यिका श्री कुन्थुमति जी
आर्यिका श्री चारित्रमति जी
आर्यिका श्री श्रुतमति जी
आर्यिका श्री विरागमति जी
ऐलक श्री वीरसागर जी
ऐलक श्री चारित्रसागर जी
क्षुल्लक श्री वर्धमानसागर जी
क्षुल्लक श्री चारित्रसागर जी

क्षुल्लक श्री वीरसागर जी
क्षुल्लक श्री समर्पणसागर जी
क्षुल्लक श्री अजितसागर जी
क्षुल्लक श्री अकलंकसागर जी
क्षुल्लक श्री निशंकितसागर जी
क्षुल्लिका श्री ध्यानमति जी
क्षुल्लिका श्री वीरमति जी
क्षुल्लिका श्री राजुलमति जी
क्षुल्लक श्री निकलंकसागर जी
क्षुल्लक श्री धर्मसागर जी
क्षुल्लक श्री महावीरसागर जी
क्षुल्लक श्री सुकौशलसागर जी
क्षुल्लिका श्री धुव्रमति जी
क्षुल्लिका श्री संयममति जी
क्षुल्लिका श्री मति जी
क्षुल्लिका श्री सन्मतिमति जी

* * *

गणिनी आर्यिका श्री 105 स्वस्तिभूषण जी की शिष्या

क्षुल्लिका श्री संस्कृतिभूषण माता जी

* * *

षष्ठ पट्टाचार्य श्री 108 ज्ञान सागर जी महाराज के शिष्य

आचार्य श्री ज्ञेयसागर जी

गणिनी आर्यिका श्री लक्ष्मीभूषण जी

(केवल गणिनी पद प्रदाता है, दीक्षा प्रदाता आचार्य श्री विद्याभूषण सन्मतिसागर जी)

गणिनी आर्यिका श्री स्वस्तिभूषण जी

(केवल गणिनी पद प्रदाता है, दीक्षा प्रदाता आचार्य श्री विद्याभूषण सन्मतिसागर जी)

आर्यिका श्री आर्षमति जी	आर्यिका श्री कुमुदमति जी
आर्यिका श्री अध्यात्ममति जी	आर्यिका श्री अंतसमति जी
क्षुल्लक श्री सम्यक्त्वसागर जी	क्षुल्लक श्री सहजसागर जी
क्षुल्लिका श्री अक्षतमति माता	क्षुल्लिका श्री अर्हत्मति जी
क्षुल्लिका श्री आमर्शमति जी	क्षुल्लिका श्री अर्चितमति जी

क्षुल्लिका श्री समतामति जी

* * *

आर्यिका श्री 105 अंतसमति जी की शिष्या

क्षुल्लिका श्री आप्तमति माता जी

* * *

सप्तम् पट्टाचार्य श्री 108 ज्ञेयसागर जी महाराज के शिष्य

मुनि श्री ज्ञातसागर जी
आर्यिका श्री अंशमति जी
आर्यिका श्री अमोघमति जी
मुनि श्री नियोगसागर जी
आर्यिका श्री अर्पणमति जी
आर्यिका श्री प्रशममति जी

आर्यिका श्री उपशममति जी
आर्यिका श्री दयामति जी
क्षुल्लिका श्री क्षयोपशममति जी
आर्यिका श्री सुज्ञानमति जी
आर्यिका श्री दर्शनमति जी

* * *

गुजरात केसरी आचार्य श्री 108 भरतसागर जी के शिष्य

आचार्य श्री शिवसागर जी
मुनि श्री तीरथसागर जी
मुनि श्री पद्मसागर जी
ऐलक श्री आदिसागर जी
मुनि श्री संयमसागर जी
मुनि श्री मानतुंगसागर जी
मुनि श्री कीर्तिसागर जी
क्षुल्लक श्री सयंमसागर जी

क्षुल्लक श्री आदिसागर जी
क्षुल्लक श्री भविष्यसागर जी
क्षुल्लिका श्री भव्यमति माता जी
क्षुल्लक श्री नंन्दीश्वरसागर जी
क्षुल्लिका श्री चन्द्रमति माता जी

* * *

गुजरात केसरी आचार्य श्री 108 भरतसागर जी द्वारा दीक्षित आचार्य श्री 108 शिवसागर जी के शिष्य

मुनि श्री सुव्रतसागर जी
मुनि श्री योगसागर जी
मुनि श्री ज्ञेयसागर जी
आर्यिका श्री आदित्यमति जी
एवं दो क्षुल्लक जी जिनके नाम ज्ञात नहीं हो सके।

* * *

आचार्य श्री 108 विवेक सागर जी महाराज के शिष्य

आचार्य श्री सुव्रतसागर जी
मुनि श्री विप्रणतसागर जी
मुनि श्री विशुद्ध सागर जी
मुनि श्री आदर्शसागर जी
आर्यिका श्री विपुलमति जी
क्षुल्लक श्री सुविधिसागर जी
क्षुल्लक श्री वीरसागर जी

आचार्य श्री विप्रमाण सागर
मुनि श्री विप्रसारसागर
मुनि श्री अर्चितसागर जी
मुनि श्री आदिसागर जी
आर्यिका श्री विनतमति जी
क्षुल्लक श्री अजेयसागर जी
क्षुल्लक श्री विभद्रसागर जी

* * *

आचार्य श्री 108 सन्मतिसागर जी महाराज (अजमेर वाले) द्वारा दीक्षित आचार्य श्री 108 कल्याणसागर जी महाराज (णमोकार मंत्र वाले)

आचार्य श्री कल्याण सागर जी महाराज अपने समय के प्रभावक साधु थे, इन्होंने णमोकार मंत्र के प्रभाव/सामर्थ्य को जन-जन तक पहुँचाया। लाखों जैन-अजैनों को लाभ हुआ, सम्मेदशिखर जी में कल्याण निकेतन नाम से बहुत बड़ा प्रांगण खरीदा गया था, वहाँ अब केवल मन्दिर है। बाँकी की जगह पर सी.आर.पी. एफ. ने कब्जा कर लिया है।

मंदसौर के पास बही पार्श्वनाथ क्षेत्र के नाम से णमोकार साधना केन्द्र में स्कूल, व्रती आश्रम, धर्मशाला, अनेक मन्दिरों के साथ नन्दीश्वर द्वीप रचना हुई है। यहीं पर इनकी समाधि स्थली है।

* * *

आचार्य श्री 108 कल्याणसागर जी महाराज के शिष्य

मुनि श्री कीर्तिसागर जी
मुनि श्री ज्योतिसागर जी
मुनि श्री शांतिसागर जी
मुनि श्री वारिषेण जी

दो आर्यिकाओं एवं दो क्षुल्लकों के नाम प्राप्त नहीं हुए।

* * *

आचार्य श्री 108 निर्मलसागर जी महाराज के शिष्य मुनि श्री 108 निर्वाणसागर जी महाराज

इनका साधना काल दीर्घ रहा। ये कुछ सीमित स्थानों पर गमन करते थे, अध्यात्म वादी थे, ये अच्छे साधक थे, जंगल में रहकर साधना करते थे। इनके शिष्य ब्र. पवन जी, ब्र. कमल जी थे, जो अभी आचार्य विद्यासागर जी के शिष्य **मुनि**

श्री निर्दोषसागर जी, मुनि श्री निर्लोभसागर जी हैं। बहुत बड़े विद्वान हैं।

* * *

आचार्य श्री 108 निर्मलसागर जी महाराज के शिष्य आचार्य श्री दर्शनसागर जी महाराज

बहुत प्रभावी संत थे। सुसनेर में 1 लाख वर्ग फीट में एक तीर्थ की स्थापना की है। चांदखेडी आदि तीर्थों का उद्धार किया था। इन्होंने 38 दीक्षायें दीं जिसमें 16 मुनि 20 क्षुल्लक, आर्यिका, क्षुल्लिका माता जी थी। उनमें से कुछ के नाम निम्न हैं।

मुनि श्री समतासागर जी (प्रथम)
मुनि श्री कल्पवृक्षनंदी जी
मुनि श्री महावीरकीर्ति जी
मुनि श्री श्रुतसागर जी
मुनि श्री शांतिसागर जी
मुनि श्री कुलभूषण जी
मुनि श्री शीलसागर जी
मुनि श्री दयासागर जी
मुनि श्री मार्दवसागर जी
मुनि श्री सकलकीर्ति जी

मुनि श्री समतासागर जी (द्वितीय) मुनि श्री शिवसागर जी
मुनि श्री मार्दवसागर जी मुनि श्री पवित्रसागर जी
मुनि श्री आदिसागर जी आर्यिका श्री मनोवती जी
आर्यिका श्री पार्श्वमति जी आर्यिका श्री सत्यमति जी
एवं दो साधुओं के नाम नहीं मिल पाये।

* * *

आचार्य श्री 108 निर्मलसागर जी महाराज द्वारा दीक्षित आचार्य श्री 108 चन्द्रसागर जी महाराज (काँच मन्दिर, सम्मेदशिखर) के शिष्य

क्षुल्लक श्री ध्यानसागर जी क्षुल्लक श्री चेतनसागर जी
क्षुल्लिका श्री पूजाभूषण जी

* * *

आचार्य श्री 108 विमलसागर जी महाराज के शिष्य आचार्य श्री 108 कुन्थुसागर जी महाराज द्वारा दीक्षित आचार्य श्री 108 सन्मतिसागर जी महाराज (त्रिमूर्ति शिखर जी वाले)

आचार्य श्री सन्मतिसागर जी ने अनेक दीक्षायें दीं पर उनका नाम नहीं मिल पाया। एक आर्यिका श्री गुणमति जी (गृहस्थावस्था की माँ थी)

* * *

आचार्य श्री 108 निर्मल सागर जी महाराज द्वारा दीक्षित गणिनी आर्यिका श्री 105 विशुद्धमति जी

चारों अनुयोगों का तल स्पर्शी ज्ञान है जैन सिद्धांत, दर्शन, व्याकरण में निष्णात है। संघ में शिष्याओं को वात्सल्यपूर्वक साधना कराती हैं। इन्होंने अनेक पुस्तकें

लिखीं हैं, ग्रंथों पर टीकाएँ भी लिखीं हैं।

इनकी शिष्यायें निम्न हैं।

गणिनी आर्यिका श्री विजयमति जी

गणिनी आर्यिका श्री विशिष्टमति जी

आर्यिका श्री विज्ञमति जी	आर्यिका श्री विशौर्यमति जी
आर्यिका श्री विदितमति जी	आर्यिका श्री विराटमति जी
आर्यिका श्री विकर्षमति जी	आर्यिका श्री विलोच्यमति जी
आर्यिका श्री विदर्शमति जी	आर्यिका श्री विप्रवमति जी
आर्यिका श्री विशेषमति जी	आर्यिका श्री विभूतिमति जी
आर्यिका श्री विदुषीमति जी	आर्यिका श्री संयतमति जी
क्षुल्लिका श्री विश्वश्रुतमति जी	क्षुल्लिका श्री विपुलमति जी

* * *

आचार्य श्री 108 निर्मलसागर जी महाराज द्वारा दीक्षित आचार्य श्री 108 शांतिसागर जी महाराज (हस्तिनापुर वाले) के शिष्य

आचार्य श्री धर्मभूषण जी
मुनि श्री चन्द्रसागर जी
मुनि श्री निर्वाणसागर जी
मुनि श्री सूर्यसागर जी

* * *

आचार्य श्री धर्मभूषण जी के शिष्य

आचार्य श्री ज्ञान भूषण जी
आचार्य श्री भारत भूषण जी
मुनि श्री चारित्रभूषण जी
आचार्य श्री सम्यक्त्वभूषण जी
ऐलाचार्य श्री क्षमाभूषण जी

* * *

आचार्य श्री 108 ज्ञानभूषण जी महाराज के शिष्य

मुनि श्री निशंक भूषण जी
मुनि श्री जिनेश भूषण जी
क्षुल्लक श्री ऋजुभूषण जी
क्षुल्लिका श्री ज्ञानगंगा जी
क्षुल्लिका श्री ज्ञानमोती जी
क्षुल्लिका श्री ज्ञानवर्षा जी
क्षुल्लिका श्री ज्ञानवाणी जी

* * *

आचार्य श्री 108 भारतभूषण जी महाराज के शिष्य

मुनि श्री भावभूषण जी
मुनि श्री भव्यभूषण जी
आर्यिका श्री भावितभूषण जी
आर्यिका श्री भव्याभूषण जी
क्षुल्लक श्री भाग्यभूषण जी
क्षुल्लिका श्री भक्तिभूषण जी
क्षुल्लिका श्री भविकाभूषण जी

* * *

प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर जी (छाणी) महाराज की परम्परा के साधु-संतों की प्रेरणा से उदित हुए नये तीर्थ एवं संस्थानों का विवरणः- प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर जी छाणी की प्रेरणा से अनेक जगह पाठशालायें, पुस्तकालय, स्कूल, छात्रावास खोले गये उनका सही विवरण प्राप्त नहीं हो पाया। कुछ का विवरण निम्न हैः-

1. आचार्य श्री शांतिसागर जी महिलाश्रम, बालिका छात्रावास, सागवाड़ा श्री 1008 श्री वर्धमान एण्ड श्री 108 श्री आचार्य शान्तिसागर (छाणी) दिगम्बर जैन ग्रंथमाला, सागवाड़ा।
2. सागवाड़ा में पहाड़ी पर आचार्य श्री की चरण छतरी है। उसका जीर्णोद्धार हो रहा है।
3. छाणी ग्राम में आचार्य शांतिसागर जी छाणी सरस्वती भण्डार (पुस्तकालय), एक पाठशाला आचार्य श्री की प्रेरणा से खुली थी, अभी ग्राम में संत निवास एवं गुरु मन्दिर आचार्य श्री के नाम से बनने जा रहा है।

4. समाधि के पश्चात् पहाड़ी पर महावीर जिनालय प्रांगण में गुरु मन्दिर बनाया गया जिसमें आचार्य शांतिसागर जी की मूर्ति एवं चरण चिन्ह स्थापित हैं।
5. आचार्य शांतिसागर आत्मोन्नति भवन, ब्रह्मचर्य आश्रम तारंगा। पंचकल्याणक के अवसर पर सन् 1928 में खोला गया।
6. बोर्डिंग, श्रावकाश्रम, सरस्वती भवन और ग्रंथमाला ईडर।
7. शुजालपुर में पाठशाला
8. पछार में पाठशाला
9. करैरा में आचार्य श्री शांतिसागर पाठशाला।
10. ललितपुर में आचार्य शांतिसागर कन्या पाठशाला।
11. शांति सेवा संघ के द्वारा आचार्य शांतिसागर दि. जैन बोर्डिंग, कन्या पाठशाला, शांति कुन्थु वाचनालय व पुस्तकालय।

* * *

चतुर्थ पट्टाचार्य श्री 108 सुमतिसागर जी महाराज की प्रेरणा से

1. आचार्य सुमतिसागर जी त्यागी व्रती आश्रम, सोनागिर
2. आचार्य सुमतिसागर जी त्यागी व्रती आश्रम, मन्दिर, धर्मशाला, सम्मेदशिखर जी

आचार्य श्री 108 निर्मल सागर जी महाराज की प्रेरणा से गिरनार सिद्धक्षेत्र पर निर्मल ध्यान केन्द्र मंदिर (संत निवास, धर्मशाला)

आचार्य श्री 108 सन्मतिसागर जी महाराज (त्रिमूर्ति शिखर जी वाले) की प्रेरणा से सम्मेदशिखर जी में सन्मति साधना सदन के माध्यम से त्रिमूर्ति मन्दिर, एक स्कूल एवं 43 कमरों की धर्मशाला। मधुबन मोड़ पर सम्मेदशिखर जी प्रवेश द्वार भी इन्हीं की प्रेरणा से बना है। 1985 में सर्वप्रथम मन्दिर का निर्माण कराया था। अभी केवल संघस्थ दीदियां निर्मला बहन आदि हैं जो वहाँ की व्यवस्था देखती हैं। आचार्य कुन्थुसागर जी के शिष्य हैं आचार्य श्री सुमतिसागर जी, आचार्य श्री निर्मलसागर जी के गुरु भाई थे।

आचार्य श्री 108 चन्द्रसागर जी महाराज की प्रेरणा से गुणायतन के सामने काँच मन्दिर का निर्माण हुआ है। आचार्य श्री निर्मलसागर जी के शिष्य है।

* * *

आचार्य श्री 108 सन्मति सागर जी महाराज द्वारा स्थापित संस्थान

1. स्याद्वाद शिक्षण परिषद् सोनागिर में छात्रावास, स्कूल, मन्दिर, यात्री निवास, गेस्ट हाउस, गुरुमन्दिर।
2. ललितपुर में स्याद्वाद स्कूल
3. सूखी सेवनियां में नया क्षेत्र मन्दिर धर्मशाला, छात्रावास और स्कूल।
4. मंगलगिरी सागर में पहाड़ी पर नया क्षेत्र, अष्ट धातु की 9 टन की 11 फिट खड्गासन मूर्ति, सात मन्दिर हैं जिसमें ग्रेनाइट 11 फिट की अनेक

मूतियां हैं, तीन मन्दिरों का निर्माण और हो चुका है, पहाड़ी पर 36 एकड़ का बड़ा प्रांगण है जिसमें स्कूल, आधुनिक धर्मशाला, संतनिवास।

5. लखनादौन में नागपुर वाराणसी हाईवे पर नया क्षेत्र मन्दिर एवं स्कूल।
6. कान्हीवाड़ा में स्कूल का निर्माण।
7. त्रिलोकतीर्थ बड़ागांव में त्रिलोक मन्दिर 158 फीट उतुंग है, जिसमें समवशरण, नंदीश्वर द्वीप जिनालय, तीस चौबीसी जिनालय, तीन लोक की रचना, स्कूल, इन्टर कॉलेज, त्रिलोक मन्दिर, औषधालय, गौशाला, पुस्तकालय, संत निवास, यात्री निवास।
8. सिंहरथ प्रवर्तन (सिंहों शावकों ने रथ खींचा) सोनागिर में।
9. स्याद्वाद क्लब (धर्म प्रभावना) प्रत्येक रविवार अलग-अलग जगह जाकर अभिषेक पूजा करते हैं।

* * *

आचार्य श्री 108 ज्ञानसागर जी महाराज की प्रेरणा से उदित संस्थाएँ

1. अंहिसा स्थली, अलवर
2. ज्ञान तीर्थ आगरा बॉम्बे हाइवे पर 30 फीट उतुंग कृत्रिम कैलाश पर्वत पर 13 फीट ऊँची ग्रेनाइट की प्रतिमा।
3. ज्ञान स्थली, मेरठ
4. आरोग्य केन्द्र मंडोला
5. आचार्य ज्ञानसागर गुरुकुल, बरनावा
6. ज्ञानसागर सराक भवन, सम्मेदशिखर
7. सराकोत्थान केन्द्र रघुनाथपुर, पश्चिम बंगाल
8. डिग्री कालेज, शाहपुर
9. प्रस्तावित कॉलेज मण्डया (मैसूर)
10. ज्ञान श्रमण भारती, मथुरा (छात्रावास)

11. नन्दीश्वर द्वीप रचना एवं चन्द्रप्रभ भगवान की बड़ी पद्मासन प्रतिमा, सोनागिर

* * *

आचार्यश्री की प्रेरणा से अतिशय क्षेत्रों का विकास क्रम।

1. श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, बरनावा
2. श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, बड़ागांव
3. करगुआं जी क्षेत्र की पहाड़ी पर 11 फीट की पद्मासन प्रतिमा
4. अलवर, तिजारा क्षेत्र की वाटिका में 16 फीट ग्रेनाइट की पद्मासन प्रतिमा
5. तिजारा में एक मन्दिर का निर्माण ग्राम पहाड़ी (अलवर) हुआ है।
6. आचार्य श्री ज्ञानसागर जी ने वहलना मुजफ्फरनगर में चरण छतरी, कीर्ति स्तम्भ, तिजारा, सिरोंज, चन्देरी, बांरा में आचार्य शांतिसागर जी छाणी की चरण छतरी स्थापित कराई है।

आचार्य विनीत सागर जी की प्रेरणा से बूंदी के निकट सिलोर ग्राम में विनीतधाम नाम से नया क्षेत्र बना है।

आर्यिका श्री 105 सृष्टिभूषण जी माता जी की प्रेरणा से विकसित संस्थायेंः-

1. आदिनाथ आदर्श सेवा संस्थान (व्रती आहार व्यवस्था) एवं मन्दिर, सोनागिर
2. साधु संतों एवं प्रतिमाधारी श्रावकों के आहार की व्यवस्था एवं धर्मशाला, सम्मेदशिखर जी
3. साधु संतों एवं प्रतिमाधारी श्रावकों के आहार की व्यवस्था एवं धर्मशाला, श्री महावीर जी
4. साधु संतों एवं प्रतिमाधारी श्रावकों के आहार की व्यवस्था एवं आश्रम, नगली डेरी, दिल्ली

क्षुल्लिका श्री 105 पूजाभूषण-भक्तिभूषण माता जी की प्रेरणा से

1. सोनागिर में चौबीस तीर्थंकरों के चौबीस समोशरण मन्दिर बनवाया है। एवं बालिका छात्रावास भी चलाती हैं।
2. सम्मेदशिखर जी में तीस चौबीसी मन्दिर एवं धर्मशाला बनाई है।

आचार्य श्री 108 भरतसागर जी महाराज की प्रेरणा से (आचार्य सुमति

सागर जी के शिष्य) भक्तामर स्तोत्र की रचना धार नगरी में मानतुंगाचार्य ने की थी, उन्हीं के स्मरण के लिए मानतुंगगिरी का निर्माण कराया। जिसमें पहाड़ी पर 31 फीट उच्च प्रतिमा, भक्तामर मन्दिर, संत निवास, यात्री निवास, गुरु मन्दिर आदि दर्शनीय है।

आचार्य श्री 108 भरतसागर जी महाराज के शिष्य आचार्य श्री 108 शिवसागर जी महाराज ने डोला (पिड़ावा) में नया क्षेत्र बनाया जिसका अधूरा कार्य आर्यिका श्री स्वस्तिभूषण माता जी की प्रेरणा से पूरा हो रहा है। इंदौर में एक तीर्थ अभी अधूरा है।

आचार्य श्री 108 ज्ञानभूषण जी महाराज की प्रेरणा से

1. 'मनोज्ञधाम' व्रती आश्रम है मोदीनगर, मेरठ रोड़
2. पलवल और होडल के बीच दिल्ली मथुरा हाइवे पर 'शांतिधाम' संतों की सुविधा के लिए है।

आर्यिका श्री 105 सरस्वती भूषण माता जी की प्रेरणा से मोदीनगर में मन्दिर एवं आश्रम की स्थापना।

आचार्य श्री 108 दर्शनसागर जी महाराज (आचार्य श्री 108 निर्मल सागर जी महाराज के शिष्य) की प्रेरणा से नवग्रह मन्दिर इन्दौर एवं दर्शनसागर जी त्रिमूर्ति मन्दिर, सुसनेर यह जगह 1 लाख 10 हजार वर्ग फीट है। जिसमें स्कूल में 700 विद्यार्थी हैं, मानस्तम्भ, नन्दीश्वर द्वीप रचना, सम्मेदशिखर रचना, कैलाश पर्वत रचना 35 कमरे की धर्मशाला, संतशाला, भोजनशाला है।

आचार्य श्री दर्शनसागर जी के शिष्य कल्पवृक्षनंदी महाराज ने फरतावाद (जलगाँव) महाराष्ट्र में एक नये क्षेत्र का निर्माण कराया है।

आचार्य श्री 108 कल्याण सागर जी महाराज (णमोकार मंत्र वाले) की प्रेरणा से मंदसौर के निकट बही पार्श्वनाथ क्षेत्र के नाम से नया क्षेत्र निर्मित किया है, जिसमें अनेक मन्दिर ध्यान केन्द्र स्कूल, आश्रम, यात्री निवास आदि हैं। इस क्षेत्र को णमोकार साधना केन्द्र के नाम से भी जाना जाता है। सम्मेदशिखर में कई बीघा जमीन पर कल्याणनिकेतन नाम से मन्दिर एवं अन्य योजनाएँ थी, पर कार्य आगे नहीं हो पाया, अभी सी.आर.पी.एफ. फोर्स ने कब्जा कर लिया है।

* * *

विदुषी लेखिका रत्न गणिनी आर्यिका श्री 105 स्वस्तिभूषण माता जी का संक्षिप्त परिचय

जन्म स्थान - छिंदवाड़ा (मध्य प्रदेश) सिवनी
जन्म तिथि - 1-11-1969
पिता का नाम - श्री मोतीलाल जी (वर्तमान में क्षुल्लक श्री परिणाम सागर जी)
माता का नाम - पुष्पा रानी जैन (वर्तमान में क्षुल्लिका अर्हतमति माता जी)
गृहस्थावस्था का नाम - संगीता (गुड़िया)
भाई-बहन - अनीना, मनीषा रानी
लौकिक शिक्षा - एम.ए. संस्कृत
दीक्षा गुरु - पंचम पट्टाचार्य श्री 108 विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज
गणिनी पद प्रदाता - सराकोद्धारक आचार्य श्री 108 ज्ञानसागर जी महाराज
दीक्षा नाम - आर्यिका 105 स्वस्तिभूषण माता जी

पदयात्रा - लगभग 40 हजार किलोमीटर

सम्मेदशिखर जी की वंदना - 121 बार, सोनागिर की 108 वंदना

संस्कार शिविर - बाल साधना संस्कार शिविर, ज्ञानध्यान शिविर, ध्यान योग शिविर शताधिक

प्रतिकृति रचनाएँ - सम्मेदशिखर जी, श्री समवशरण, कैलाश पर्वत (अनेकों नगर में) पावापुर की रचना।

जेल में प्रवचन - केन्द्रीय कारागार अम्बाला, रूड़की जेल, सोनीपत जेल, जिला कारागार झालावाड़, केन्द्रीय कारागार कोटा, करैरा जेल, शिवपुरी जेल, जयपुर जेल, मुरैना जेल में प्रवचन, अनेकों स्कूलों में प्रवचन के साथ कोटा का प्रख्यात कोचिंग सेन्टर, ऐलन में 16000 विद्यार्थियों को मार्गदर्शन (2012), बाइब्रेट, कैरियर प्वाइंट में भी विद्यार्थियों को मार्गदर्शन, आर.एस.एस. सभाओं को सम्बोधन जैन नगर जगाधरी एवं ग्वालियर में। 22 श्रावक संस्कार साधना शिविर लगाये। महिलाओं के शिविर, महिला सम्मेलन, डॉक्टर सम्मेलन, एडवोकेट

सेमिनार, टीचर सम्मेलन, दो अखिल भारतीय युवा सम्मेलन, स्मार्ट गर्ल मार्गदर्शन, हरिद्वार बी.एच.ई.एल. के अधिकारियों, इंजीनियरों के बीच प्रवचन, अनेक सार्वजनिक स्थानों पर प्रवचन।

माता जी की प्रेरणा से

1. पंडेर अम्बाला शहर, गोहाना, रूड़की पंडेर में संत निवास का निर्माण हुआ।
2. रूड़की में धर्मशाला का उद्घाटन हुआ।
3. कैराना में नसिया जी का निर्माण एवं पंचकल्याणक सम्पन्न हुआ
4. जैन अपार्टमेंट, रोहणी, दिल्ली में श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर का निर्माण हुआ।
5. देवली में शिखर का कलशारोहण (2014) एवं 2024 में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा हुई।
6. मुरादाबाद में तीन जगह में पोहरी, राजमहल, कोटाज मुरार, ग्वालियर,

सोनीपत, में वेदी प्रतिष्ठा।

7. सावर में वेदी प्रतिष्ठा एवं पंचकल्याणक प्रतिष्ठा।
8. सोनीपत में मन्दिर का जीर्णोद्धार।
9. भट्टारक की नसिया में 2022 में एक साथ 251 मण्डलों पर सिद्धचक्र महामण्डल विधान जिसमें 1000 से अधिक लोग बैठे थे।
10. श्री मुनिसुव्रनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्रा (स्वस्तिधाम) जहाजपुर, विश्व स्तरीय सुन्दरता एवं व्यवस्थाओं से पूरे भारत में प्रसिद्ध है। यहाँ चित्ताकर्षक दिगम्बर जैन समाज का प्रथम जहाज मन्दिर, चौबीसी, सहस्रकूट जिनालय, श्री शांति जिनालय मानस्तम्भ, तीर्थंकर केवली वृक्ष एवं चरण चिन्ह, मां पदमा भवन पिता सुमित्र भवन, 30 फ्लेट, संत निवास, सरस्वती मन्दिर, चन्दनबाला भवन (आर्यिका निवास) 2 मांगलिक भवन, यात्री निवास, तुष्टी-पुष्टी भोजनशाला, अल्पाहारग्रह आदि रचनाएँ हैं।
11. मां स्वस्ति इन्टरनेशनल के नाम से एक स्कूल एवं श्री गोपाल दिगम्बर

जैन संस्कृत महाविद्यालय का उत्थान।

12. सोनागिर पर्वत पर सहस्रकूट जिनालय का निर्माण चल रहा है। (निर्माणाधीन) पर्वत पर सोनागिर सिद्धक्षेत्र।
13. अतिशय क्षेत्र पद्मपुरा में चौबीसी का निर्माण कार्य सम्पन्न हुआ एवं मूल मन्दिर के शिखर को पहले की अपेक्षा विशाल एवं मनोज्ञ किया गया है।
14. श्री मुनिसुव्रतनाथ का प्राचीन क्षेत्र केशवरायपाटन जो चम्बल नदी के किनारे 2000 वर्ष प्राचीन अतिशय क्षेत्र है, माता जी के निर्देशन में विशाल कलायुक्त नया मन्दिर निर्मित हो रहा है।
15. बारां नगर में अतिशय क्षेत्र नसियां जी में भी महावीर स्वामी का मन्दिर बन रहा है।
16. आगरा बॉम्बे हाइवे पर मुरैना में ज्ञान तीर्थ का अधूरा कार्य पूरा एवं पंचकल्याणक माता जी के निर्देशन एवं सान्निध्य में सम्पन्न हुआ।

17. शुभकामना परिवारः-12 लोगों का एक समूह होता है, जो प्रत्येक माह समूह के एक व्यक्ति के घर पर भक्तामर स्त्रोत पाठ चालीसा आरती भजन जाप करते हैं। इस बैनर के नीचे सामाजिक, धार्मिक कार्यों को भी सम्पन्न करते है इसकी भारत भर में 400 के करीब शाखायें हैं। प्रत्येक वर्ष आर्यिका स्वस्तिभूषण माता जी का जहाँ प्रवास होता, वहाँ एक राष्ट्रीय अधिवेशन होता है।
18. आर्यिका श्री स्वस्ति भूषण माता जी ने जहाज मन्दिर में परिक्रमा मार्ग में आचार्य शांतिसागर जी छाणी परम्परा के आचार्यों के मार्बल पर चित्र उकेरे गये हैं। वाटिका में चरण चिन्ह भी स्थापित हैं।
19. जैन साहित्य रचना-शाताधिक पुस्तकों की लेखिका, जिसमें 45 विधानों की रचना। जिनपद पूजांजलि नाम से सम्पूर्ण जिनवाणी।
20. करौली प्राचीन जैन मंदिर वेदी का जीर्णोद्धार।
21. कोटा में विज्ञाननगर स्वाध्याय भवन एवं बसंत विहार में संत निवास

22. तालेड़ा में संत निवास
23. राजमहल में वेदी प्रतिष्ठा एवं नसिया जीर्णोद्धार
24. बंगाल में सराक बंधुओं के लिए पाठशाला सिलाई सेंटर आदि
25. समरानिया में शिखर निर्माण
26. मधुवन शिखर जी में पहाड़ी मंदिर का शिखर निर्माण
27. कोटा बारा में स्वस्ति वात्सल्य धाम (वृद्धाश्रम)

* * *

परम विदुषी लेखिका आर्यिका रत्न श्री 105 स्वस्ति भूषण माता जी द्वारा रचित कृतियां

श्री जिनपद पूजांजलि (विशेष कृति)

विधान संग्रह

1. श्री कल्पद्रुम विधान 2. श्री इन्द्रध्वज विधान 3. श्री सिद्धचक्र विधान 4. श्री सम्यक् विधान संग्रह 5. श्री मनुष्य लोक विधान 6. श्री श्रुत स्कन्ध विधान 7. श्री चौबीसी विधान 8. श्री नवग्रह शांति विधान 9. श्री कल्याण मंदिर विधान 10. श्री दशलक्षण विधान 11. श्री पंचमेरू विधान 12. श्री ऋषि मंडल विधान 13. श्री कर्म दहन विधान 14. श्री समवशरण विधान 15. श्री चौंसठ ऋद्धि विधान 16. श्री यॉग मंडल विधान

17. श्री पंच परमेष्ठी विधान 18. श्री पंचकल्याणक विधान 19. श्री वास्तु शुद्धि विधान 20. तीर्थंकर विधान संग्रह भाग-1 21. श्री पंच बालयति विधान 22. श्री सम्मेद शिखर विधान 23. श्री सोनागिर विधान 24. श्री सिद्धक्षेत्र गिरनार विधान 25. श्री आदिनाथ विधान 26. श्री पद्मप्रभ विधान 27. श्री चन्द्रप्रभ विधान 28. श्री वासुपूज्य विधान 29. श्री विमलनाथ विधान 30. श्री शान्तिनाथ विधान 31. श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान 32. श्री नेमिनाथ विधान 33. श्री पार्श्वनाथ विधान 34. श्री महावीर विधान 35. श्री जम्बू स्वामी विधान 36. श्री भक्तामर स्तोत्र विधान 37. श्री नन्दीश्वरद्वीप लघु विधान, 38. श्री रत्नत्रय विधान, 39. श्री तीर्थंकर विधान संग्रह भाग -2, 40. श्री तीर्थंकर विधान संग्रह भाग-3, 41. श्री चारित्र शुद्धि विधान 42. श्री संभवनाथ विधान, 43. श्री सोलहकारण विधान, 44. श्री सुमतिनाथ विधान, 45. श्री अभिनंदन नाथ विधान,

46. श्री कुन्थुनाथ विधान, 47. श्री अजितनाथ विधान, 48. श्री पद्मप्रभ शान्तिनाथ विधान, 49. आचार्य छत्तीसी विधान

काव्य संग्रह

1. मेरी कलम से 2. भजन संग्रह 3. भजन सरिता 4. अमृत की बूंदे 5. श्री सम्मेद शिखर चालीसा 6. बड़ा ही महत्व है 7. आरती ही सारथी 8. जिन ज्ञान किरण 9. भक्ति संग्रह 10. काव्य वाटिका (भाग-1, 2) 11. श्री भक्तामर जी पाठ (हिन्दी) 12. प्रभु भक्ति की पोटली (चालीसा संग्रह) 13. भक्ति पुंज 14. आत्मा की आवाज 15. विनयांजलि 16. श्री सहसनाम स्तोत्र (हिन्दी रुपान्तरण) 17. पुण्य वर्धिनी 18. आचार्यों की प्रभु भक्ति (हिन्दी पद्यानुवाद) 19. भक्ति की संम्पदा (स्तोत्र संग्रह)

पूजन संग्रह

1. श्री सम्मेद शिखर टोंक पूजन 2. दीपावली पूजन 3. श्री आदिनाथ पूजन एवं चालीसा (रानीला) 4. श्री आदिनाथ पूजन अतिशय क्षेत्र (चाँदखेड़ी) 5. पद्म प्रभ पूजन (शाहपुर) 6. श्री चन्द्रप्रभ जिन पूजन संग्रह (सोनागिर जी) 7. श्री चन्द्र प्रभ पूजा (अतिशय क्षेत्र, तिजारा जी) 8. श्री चन्द्रप्रभ चौबीसी जिनालय पूजन (कैराना) 9. श्री वासुपूज्य जिन पूजन संग्रह (सिद्धक्षेत्र चंपापुरजी) 10. श्री शांतिनाथ पूजन (सूर्य नगर) 11. श्री नेमीनाथ पूजन संग्रह (सिद्धक्षेत्र गिरनार जी) 12. श्री पार्श्वनाथ पूजन एवं चालीसा 13. पार्श्वनाथ पूजन (जलालाबाद) 14. श्री पार्श्वनाथ, हांसी अतिशय क्षेत्र पूजन 15. अतिशय क्षेत्र बड़ागांव पूजा 16. श्री महावीर जिन पूजन संग्रह 17. स्वस्ति जिन अर्चना (सिद्ध क्षेत्र पावापुरजी) 18. श्री गोम्टेश्वर बाहुबली स्वामी विनयांजलि 19. कुंदकुंद स्वामी पूजा संग्रह, बारा (राजस्थान)

20. गुरू अर्चना (आ. 108 सन्मतिसागर जी) 21. श्री शांतिनाथ पूजा संग्रह (झालरापाटन) 22. श्री मुनिसुव्रतनाथ पूजन, भजन, चालीसा (जहाजपुर) 23. श्री मुनिसुव्रतनाथ पूजन एवं चालीसा (किरठल) 24. श्री मुनिसुव्रतनाथ पूजन एवं चालीसा (केशवराय पाटन) 25. श्री चन्द्रप्रभ भगवान पूजन एवं चालीसा (चंद्रांचल स्वस्ति तीर्थ प्यावड़ी)

गद्य संग्रह

1. दीक्षा कठिन परीक्षा 2. जैन त्यौहार कैसे मनायें ? 3. प्रतिक्रमण (किये अपराध जो हमने) 4. स्वस्ति आत्म बोध 5. स्वस्ति सोपान 6. मुक्ति सोपान (धार्मिक सांप सीढ़ी) 7. श्री ऋषभदेव अनुशीलन 8. नानी की कहानी (भाग-1,2,3) 9. प्रभावना प्रवाह (भाग-1, 2) 10. आओ दीपावली पूजन करें 11. दीपावली कैसे मनायें। **12. टर्निंग पॉइण्ट (प्रवचन संग्रह)**

13. वीतरागी का आकर्षण 14. ऊँ नमः सबको क्षमा 15. आहार को समझे औषधि **16. स्मार्ट कौन 17. आप VIP है** 18. जीवन एक परीक्षा 19. भाग्य कैसे बनता है 20. **WINNER** विजेता महावीर (प्रवचन संग्रह) 21. रेत के घर (प्रवचन संग्रह)